प्रकाशक :
कृषि गो-सेवा विभाग
सर्व-सेवा-संघ
गोपुरी, वर्धा

प्रथम संस्करण २०००

मूल्य एक रुपया

सन् १९५१

मुद्रक :
जमनालाल जैन,
व्यवस्थापक
श्रीकृष्ण प्रिंटिंग वर्क्स, वर्धा

लेखक का मंतव्य

मेरा आजतक का जीवन देहाती रहा है और पशु मेरे आबाल्यतः साथी रहे हैं। जब हमारे घर का कोई पशु बीमार होता तो पड़ोस का वृद्ध किसान बुलाया जाता और वह अपनी समझ से कोई दवा कूट-पीस कर उसे खिला-पिला देता पशु ठीक भी हो जाता, तब यह भावना उठी कि हमारे आस-पास उगने वाले इन घास-पत्तों में बड़ा गुण है और प्रकृति कितनी उदार है कि ये चीजें हमें बिना मूल्य इतनी मात्रा में देती है। तभी से इन औषधियों की खोज में लगा। अनुभवी लोगों से जो सीखा, सुना, उसे अनुभवों द्वारा सिद्ध करता रहा। आज मुझे हर्ष है कि जो कुछ भी अनुभव इस दिशा में मुझे प्राप्त हुए वे पाठकों के सन्मुख रख रहा हूं।

भारतीय पशु-चिकित्सा एक स्वतंत्र शास्त्र रहा है जो पुरातन महर्षियों द्वारा प्रतिपादित हुआ और आधुनिकता और पाश्चात्य पद्धति के आवरण में विलुप्त ही हो गया है। जो कुछ थोड़े-बहुत अनुभव द्वारा प्राप्त हुये नुस्खे व्यक्तियों में परंपरा से चले आते हैं वे भी अत्यंत संकुचित मनोवृत्ति के कारण उनके जीवन के साथ ही समाप्त हो जाते हैं। यह देखने में आया है कि लोग अपने वंशजों को भी यह ज्ञान वितरण करने में संकोच करते हैं। ऐसी मनोवृत्तियों के कारण लेखक को भी अत्यंत कठिनाई होती रही है। आचार्य श्री. चन्द्रिकाप्रसाद पांडेय की प्रेरणा के अतिरिक्त उपर्युक्त असद्-मनोवृत्तिने भी इस प्रकाशन में मुझे प्रेरणा दी है।

इस प्रकाशन में उन उपचारों को ही स्थान दिया गया है जिनका पूरा अनुभव पशुओं पर किया जा चुका है और उन ही रोगों पर विशेष विचार किया गया है जो साधारणतया इस देश के पशुओं में हुआ करते हैं।

रोगों की संक्रामकता के बारे में मेरे विचार कुछ निजी हैं जिनके कारण मैं इनपर विशेष ध्यान नहीं देता। क्योंकि, देखने में आ रहा है

कि पाश्चात्य पद्धति के अनुयायी छूत से दूर रहने और रुग्ण पशुओं को आपस में न मिलने देने के पक्ष में रहते आये हैं। वे ही हताश होकर कहते हैं कि (फुट एण्ड माऊथ) मूँह-खूरी की बीमारी में बीमार पशु की लार कुल पशु-समूह को लगा देना चाहिये ताकि सब पशु एक ही बार रोगी हो जायँ। जो कुछ होना हो सो हो जाय।

कितनी विवशता है! कितनी निराशापूर्ण स्थिति!! कितना जोखम का तरीका!!!

विचारने का विषय है, जिस चीज से इतने दूर भागते हैं—मौत का सा डर दिखता हैं, फिर उसी चीज को चलाकर पशुओं में फैलाने की कोशिश। कितना भयंकर परस्पर विरोधी विधान है! यदि हर पशु को दूर रखकर बचाना सम्भव है तो इतना भय क्यों? और यदि इतना सब कुछ करने पर भी सम्भव नहीं तो, स्वयं चलाकर रोग को निमंत्रण देने का क्या अर्थ है?

कहा जाता है कि अमेरिका आदि देशों ने 'रींडरपेस्ट' (माता) से छुटकारा पा लिया है। वहाँ जब जब यह रोग पशुओं में आया, उनको मार दिया गया ताकि रोग अन्य पशुओं में न फैले। उन्होंने यह मान लिया है कि इस रोग में मृत्यु संख्या शत प्रतिशत होती है। हमारे यहाँ इस रोग में मृतसंख्या केवल ५० से ६० प्रतिशत बताई जाती है। यदि ऐसे तरीके हमने भी अपनाये तो जो बचने की सम्भावना हो वह भी नष्ट हो जायगी। ऐसा न करके हमें तो केवल प्रकृति के सेवक की तरह कार्य करना है। प्रकृति की सारी जिम्मेदारी अपने पर ही ले लेना हमारी भारी भूल है। वास्तविकता यह है कि जैसे उपदेश पाश्चात्यों द्वारा हमारे पास आते हैं वे न तो अपने देश की परिस्थितियों के अनुकूल हैं और न भारतीय संस्कृति से मेल ही खाते हैं।

एन्थ्रेक्स आदि संक्रामक मानी जानेवाली बीमारियों में 'सीरम' और 'वायरस' के उपचार पर ही निर्भर रहना हमारी भूल है। एक तो स्वतः यह एक हिंसात्मक प्रक्रिया है। परन्तु "एक के द्वारा अनेक का हित" इस रीति से साधन होता है, अवश्य। किन्तु, विशेषज्ञ स्वयं मानते हैं कि 'सीरम' आदि का असर अस्थाई और क्षणिक होता और रोग से बचा रखने के लिए पशुओं को बार बार टीका देते रहना पड़ता है। इस तरह स्थायी इलाज तो नहीं हुआ।

इस पद्धति की प्रक्रिया को सुनकर आप को आश्चर्य होगा। किसी निरोग पशु के रक्त में रोगी पशु के रक्त को प्रवेश किया जाता है और फिर वह रोग उस पशु को उत्पन्न होने पर वापस उसका रक्त निकालकर अन्य पशुओं में "रोग प्रतिरोधक शक्ति" उत्पन्न रहने के लिए प्रवेश करा दिया जाता है। इस में बहुत बड़ी जोखम यह है कि कितने ही अन्य रक्त रोग बाहर से आकर प्रवेश करते हैं। "गये थे रोजे छोड़ने और नमाज गले बंधी" वाली बात चरितार्थ होती है। मेरे विनम्र विचार में ऐसी "प्रतिरोधक शक्ति" का अर्थ ऐसा है जैसे बाहर के गुंडों के आतंक से बचने के लिए अपने घर में पहिले से कुछ और गुंडे लाकर उनके द्वारा बचाव की उम्मीद करना।

इसके अतिरिक्त जब पशु में प्रतिवर्ष बार बार किसी न किसी रोग के लिये 'सीरम' 'वायरस' प्रयोग चलता ही रहेगा तो उसकी नैसर्गिक "प्रतिरोधक शक्ति" शनैः शनैः नष्ट होगी। यही कारण है कि पाश्चात्य देशों में पशु "रींडरपेस्ट" आदि रोगों में ही नहीं बल्कि "मुँह खुरी" में जिसकी अपने देश में पर्वाह तक नहीं की जाती, तुरन्त मर जाते हैं।

हमें नैसर्गिक उपचारों पर ही विशेष ध्यान देना है और प्रकृति ने अटूट भण्डार जो वनस्पतियों के रूप में हमें दिया हुआ है उसी से लाभ उठाना है। आवश्यकता है खोज की। शताब्दियों का आवरण हमारे

दृष्टिकोण पर आया हुआ है और हम इतने परावलम्बी हो चुके हैं कि साधारण चीज़ के लिये भी बाहर मुँह ताकते हैं।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है यहाँ उन रोगों पर ही विचार किया है जो साधारणतया हमारे पशुओं में होते हैं और जिनके लक्षण हमारे देहाती भाई खूब पहिचानते हैं। सरलता की दृष्टि से अन्य पुस्तकों की भाँति रोग के कारण आदि शास्त्रीय विवेचन के प्रपंच में मैं नहीं पड़ा हूँ। दृष्टिकोण यही रहा है कि इन-इन रोगों पर ये-ये उपचार खूब अनुभव सिद्ध हैं जिनका प्रयोग गांवों में यदि किया गया तो काफी लाभ होगा ऐसी आशा है।

मेरा निजी विश्वास तो 'टोटकों' आदि पर भी रहा है और अनुभवने प्रमाणित भी किया है। कार्य-कारण सम्बन्ध नहीं किये जाने पर भी विश्वास के आधार पर इनका प्रयोग किया जा सकता है। हानि तो होने वाली ही नहीं है, कुछ लाभ ही होगा।

राजस्थानी भाई श्री भगवानदासजी जोशी (सुवाणा) के परिश्रम द्वारा इन उपचारों, दवाइयों तथा उनके उपयोगों को एक सूत्र में संकलित किया है। मैं कह सकता हूँ ऐसे श्रम बिना यह कार्य इतना सुगम नहीं हो सकता था। इनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रगट करता हूँ। इसी प्रकार गोप विद्यालय, गोपुरी के आचार्य श्री. चन्द्रिकाप्रसादजी पाण्डेय ने समय समय पर इस संकलन को संशोधित किया इनका भी मैं आभारी हूँ।

यद्यपि यह पुस्तिका इस विषय पर सम्पूर्ण होने का दावा नहीं कर सकती तथापि यदि देहाती पशुओं को जहाँ और कोई उपचार सुलभ नहीं होते उन्हें लाभ पहुँचा तो मैं अपने को कृतार्थ मानूँगा।

पिपरी
६।१२।५१

—गो-सेवक रामगोपाल पटेल

दो शब्द

आज दुनिया में चिकित्सा की अनेक पद्धतियां चल रही हैं। इस जमाने में अेलोपेथीने वहुत उन्नति की है और वड़े से वड़े शास्त्रज्ञ और आज की सभी सरकारें इसके पीछे पूरी शक्ति खर्च कर रही हैं। जिन देशों में इस पद्धति का विकास हुआ है उन देशों का उत्पादन भारत के मुकावले काफी अधिक है। इस पद्धति का उन देशों ने वहुत लाभ उठाया है। फिर भी हमारे देश में इसकी अधिक प्रगति नहीं हो सकी है। कुछ शहरों तक ही वह सीमित है। इसका मुख्य कारण पद्धति का खर्चीलापन है। हमारे किसान की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर है कि वह अपने खुद के लिये भी इस चिकित्सा का लाभ नहीं ले सकता। तव फिर पशुओं का सवाल ही नहीं उठता। हमारे किसान के पशुओं को उसी पद्धति से लाभ पहुंच सकता है जिसका ज्ञान और खर्चा उसके वूते के वाहर न हो। हमारी देशी चिकित्सा पद्धति दोनों वातों में किसान के अनुकूल है। इसका ज्ञान भी किसान को आसानी से हो सकता है और खर्चा भी वहुत कम लगता है सिवाय वहुत-सी चीजें आसपास ही मिल जाती हों। किसी दूसरे देश पर अवलंवित भी नहीं रहना पड़ता। इस सव दृष्टि से किसान के हित में एक मात्र देशी चिकित्सा पद्धति ही लाभदायी होगी ऐसा हमारा ख्याल है।

अेलोपेथीकी जो कुछ दवाइयां किसान के वूते में होंगी उनका भी उपयोग करेंगे। किसी भी पद्धति का निषेध नहीं है। फिर भी इस देशी पशु चिकित्सा को ही अधिक से अधिक प्रोत्साहन देने का संघने तय किया है। हमारा विश्वास है कि आज भी इस देशी चिकित्सा में काफी शक्ति मौजूद है। इस ओर अधिक ध्यान दिया जाय तो यह वड़ी लाभदायी वन सकती है।

देशी चिकित्सा को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से हम यहां दो तीन साल से प्रयोग कर रहे हैं। इंदौर निवासी पशु वैद्य श्री राम गोपाल कुलमी की सेवायें हमें इस काम के लिये मिली हैं। इतने दिनों के अनुभव से हमने देखा कि पशुवैद्य रामगोपाल अच्छे अनुभवी हैं और देशी चिकित्सा से सब तरह का इलाज काफी अच्छे तौर से कर सकते हैं। खास तौर से मुंहखुरी, पैरखुरी, मोरकीड़ा, गलघोंटु, हड्डीका टूटना, किसी भी तरह के जख्म आदि बीमारियोंका इलाज विशेष हुआ है।

यहां जो अनुभव आये उनका सार और पशुवैद्य रामगोपाल के स्वतः अनुभवों का सार जनता के हितके लिए यहां दिया गया है। आशा है इससे जनता लाभ उठावेगी।

विशेष रूपसे जो भाई प्रत्यक्ष वर्धा में आकर इस विषय का ज्ञान प्राप्त करना चाहें उनके लिये विना खर्च शिक्षा की सुविधा की जा सकेगी॥ आने के पूर्व संघ की अनुमति ले लेनी चाहिये।

वर्धा,
१।१२।५१

राधाकृष्ण बजाज
मंत्री
अ. भा. सर्व-सेवा-संघ
कृषि गो-सेवा विभाग

विषय सूची

पशुओं की
सिद्ध वनौषधि चिकित्सा
["भारतीय पशु चिकित्सा शास्त्र"]

शीतला या माता

केवल जुगाली करने वाले जानवरों पर ही इस रोग का आक्रमण होता है। रोग के लगते ही ५–६ दिन में यह रोग भयंकर रूप धारण कर लेता है।

लक्षण

रोग लगने पर प्रथम शरीर का तापमान बढ़ जाता है। बुखार ४-५ डिग्री तक बढ़ जाता है। शरीर में फुन्सियों के निकलने पर गर्मी घटने लगती है। नाड़ी की गति बढ़ जाती है। इस रोग की चार अवस्थायें होती हैं:—

पहली अवस्था:— पहली अवस्था में जानवर का शरीर गर्म हो जाता है। मुख की श्लेष्मिक झिल्ली के रक्त संचालन में बाधा उत्पन्न होने लगती है। जानवर को खाँसी चलती है, शरीर-काँपन होती है, गोबर कफ-युक्त होता है। भूख कम लगने लगती है। जानवर बार बार अपने दाँत पीसता है और शरीर के रोयें खड़े हो जाते हैं।

दूसरी अवस्था:— श्वास जोर जोर से चलने लगता है। खाना पीना और जुगाली करना बन्द हो जाता है। आँखों में गीद (मैल) बार बार आता है। जानवर के मुँह में गालों की झिल्ली लाल हो जाती है। जिव्हा पर छाले उत्पन्न हो जाते हैं। गोबर पतला होता है। गोबर होते समय जानवर काँखता है।

तीसरी अवस्थाः— मुँह छालों से भर जाता है। खाना-पीना, जुगाली करना कतई बन्द हो जाता है। गोबर बहुत ही पतला होता है। गोबर में से दुर्गन्ध निकलती है। नेत्रों में से श्वेत श्वेत रंग के विषैले पदार्थ के निकलने के कारण नेत्रों के आस-पास की खाल उड़ जाती है। मुँह में छाले होने से मुँह से लगातार लार गिरती है। छाले एक दूसरे से मिलकर फोड़े का रूप धारण कर लेते हैं। इस अवस्था में अक्सर गाभिन जानवरों में गर्भपात हो जाता है। गोबर रक्तमिश्रित और बहुत ही पतला होता है।

चौथी अवस्थाः—इस अवस्था में जानवर को निरन्तर खून के दस्त लगते हैं। जानवर अत्यन्त अशक्त बन जाता है। मालिक की लापरवाही के कारण सींग की जड़ों, मुँह, कान, नेत्र और पैरों में कीड़े पड़ जाते हैं। इस अवस्था में पहुँचने पर जानवर बहुत जल्दी मर जाता है।

चिकित्सा

(१)	हस्तीशुण्डी पूरा पौधा	१ तोला
	पानी	२ छटांक

प्रथम हस्तीशुण्डी को बारीक बांट कर उसे पानी में मिलाकर रोगी जानवर को पिला देना चाहिए। यह दवाई उपर्युक्त मात्रा में सुबह शाम दोनों समय जानवर को पिलाना चाहिए। यह दवाई पिलाते ही दस्त बन्द होने लग जाते हैं। जानवर को अगर "आफरा" होता है तो उतर जाता है। जानवर के स्वस्थ होने तक यह औषधि रोगी को बराबर पिलाते रहना चाहिए।

हस्तीशुण्डी अक्सर तालाब, नदी एवं नालों में होती है। यह पौधा भूमि पर छतरी के सदृश फैलता है। इसके छोटे छोटे श्वेत फूल आते हैं। यह पौधा अक्सर अगहन माह में उत्पन्न होता है और वर्षा

ऋतु आते ही नष्ट हो जाता है। फल निकल आने पर इसकी बहुत जल्दी पहिचान होती है। हस्तीशुण्डी छांह में सुखाकर जरूरत के वक्त काम में लाई जा सकती है।

(२) जानवर के खाना-पीना और जुगाली करना बन्द करने पर और मुँह में छाले हो जाने पर उसको प्रतिदिन सुबह-शाम एक-एक छटांक की मात्रा में अलसी का तेल पिलाना चाहिए। इससे छालों के आराम होने में बहुत अधिक सहायता मिलेगी।

(३) रक्त मिश्रित दस्त लगने पर—

बेल फल का गूदा	१० तोला
ज्वार का आटा	८० तोला
पानी	१६० तोला

सबको मिलाकर इसी मात्रा में दिनमें २ बार देना। बेल फल के गुदे को बारीक पीस छान कर देना चाहिए। इस दवाई से रक्त मिश्रित दस्त बन्द हो जायेंगे।

(४) अरणी की पत्ती का रस ५ तोला या
नीम की पत्तियों का रस ५ तोला

रोगी जानवर को पिलाना चाहिए। इससे अन्दर की गर्मी शान्त हो जायगी। छालों में सुधार होगा। प्यास मिट जायगी और दस्त बन्द होंगे।

इसके अलावा जानवर को हलकी, पतली और पोषक खुराक देना चाहिए। इसके लिये चाँवल का माण्ड, अलसी की पेज आदि काममें लाना चाहिए। रोगी जानवरों को निरोगियों से बिल्कुल अलग रखना चाहिए। मरे हुए जानवर की चमड़ी भूल कर भी नहीं निकलवाना चाहिए। इस रोग से जो जानवर मर जाय उसको ५-६ फीट गहरा

गड्ढा खोद उसमें चूना डाल गाड़ देना चाहिए। रोगी जानवर का टट्टी-पेशाब इधर उधर कभी नहीं फेंकना चाहिए बल्कि गहरे गड्ढे में गाड़ देना चाहिए।

(५) मुई नीम की या टेमरुन (टीमरु) की गुंद की धुनी देना।

(६) दमना की पत्ती ३ तोला } पीसकर पानी के साथ देना।
पानी २० ,,

(७) सूखी हुई उखडणी का जीव (साबूत नदी की सीप का जीव) पानी में घोलकर पिलाना चाहिए।

(८) तीसरी अवस्था में जानवर को पतला खूनी दस्त बढ़ जाय तो :-

रान वटाना (समूचा पौधा) ५ तोला
पानी ४० ,,

पिला देना चाहिए।

(९) शीशम की पत्ती २० तोला
पानी ३० ,,
पीस कर तथा मिला कर पिला देना चाहिए।

(१०) दागः— पानी की कूख में ६ इंची आडे दाग लगा दें।

(११) माता निकलने पर गूगल की धूनी दें।

शोथ-ज्वर

कारण

जंगल तथा पहाड़ों पर प्रथम बार जब वर्षा होती है तो उसका पानी पत्थर आदि कई जगह धुलकर इकट्ठा हो जाता है जिसके पीने से यह रोग हो जाता है। खास कर कम उम्र के पशुओं को यह अधिक होता है।

लक्षण

जानवर सुस्त होता है। झुण्ड के सब जानवरों से अलग खड़ा रहता है। चलते हुए जानवरों में सबसे पीछे लंगड़ाता हुआ चलता दिखाई देता है। चारों पैरों से जहाँ लंगड़ाता है वहाँ सूजन दिखाई देती है। सूजन को दबाने से "चर चर" आवाज़ आती है। जानवर जल्दी जल्दी श्वास लेता है, तेज ज्वर भी होता है। जानवर दाँत पीसता है। अक्सर २४ घण्टे में जानवर मर जाता है।

इलाज

१. कांस के फूल २० तोला
पानी ८० तोला

कांस के फूलों को बारीक पीस पानीमें मिला रोगी जानवर को पिलाना चाहिए। इस प्रकार इसी मात्रा में दिन में ३-४ बार पिलाना चाहिए।

२. तेन्दू फल एक पूरा फल हलदी ५ तोला
सत्यानाशी ५ तोला छाछ १२० तोला
आपामार्ग (ओंगा) अतिझाड़ा ५ तोला

इन सब को बारीक पीस दिन में तीन बार पिलाना चाहिए।

खान-पान

जानवर को हलकी, पतली और पोषक खुराक देना चाहिए। मुलायम घास एवं चाँवल का माण्ड आदि खाने में देना चाहिए। रोगी को अन्य जानवरों से बिल्कुल अलग रखना चाहिए।

गलघोटू

कारण—यह एक रक्त-विकार की बीमारी है। नौजवान जानवरों में यह रोग अधिक होता है। जो जानवर नदी नालों की तराइयों में पैदा हुई सड़ी गली घास खा जाते हैं उनको यह रोग जल्दी होता है।

लक्षण

जानवर अत्यन्त सुस्त दिखाई देता है। जानवर को तेज ज्वर होता है। जो कभी कभी ६ से ८ डिग्री तक पहुँच जाता है। गले पर बहुत सख्त प्रकार की सूजन होती है। सूजन दबाने पर भी नहीं दबती है और दबाने पर जानवर को बहुत अधिक दर्द होता है। कभी कभी तो सूजन को स्पर्श करने से ऐसा लगता है जैसे जानवर के गले में कोई सख्त प्रकार की वस्तु अटक गई है। जानवर बहुत जोर का खर्राटेदार श्वास लेता है जो बहुत दूर से ही सुनाई देता है। इस प्रकार दम घुटघुट कर एक दो दिन में जानवर मर जाता है।

इलाज

१. कांस के फूल ५ तोला
पानी ४० तोला

कांस के फूलों को बारीक पीस छानकर पानी में मिला रोगी को पिलाना चाहिए। इसी प्रकार इसी मात्रा में दिन में ३-४ बार पिलाना चाहिए।

२. तेन्दूफल १ फल
सत्यानाशी ५ तोला
अतिझाड़ा या आंधीझाड़ा ५ तोला
हल्दी ५ तोला
छाँछ १२० तोला

इन सब को बारीक पीसकर पानी के साथ बीमार को पिलाना चाहिए।

३. दागना:—गले पर जहाँ सूजन हो वहाँ इस प्रकार का "X" लोहे को गर्म करके दाग लगाना चाहिए। दाग अधिक गहरे हों

लगाना चाहिए। दाग लगाने के लिए दाँतली-हंसिया या इसी प्रकार का कोई भी औजार उपयोग में लाया जा सकता है।

खान-पान एवं सूचनाएं

इस बीमारी में भी वे सब सावधानियां बरती जानी चाहिए जो माता, शोथ-ज्वर आदि में बरती जाती हैं।

रोगी को अगर निम्न लिखित वस्तुएं खिलाई जाँय तो उनसे भी फायदा हो सकता है।

१. पानी में का आगिया लाकर आटे में मिला जानवर को खिलाना।

२. अरण्डी का तेल १ पाव और भिलावे २१ बारीक कूट गर्म करना और छानकर जानवर को पिलाना।

३. खेजड़े के ऊपर का बांधा ४० तोला।
पानी १२० तोला।

दोनों को उबालना। पानी जब ६० तोला रह जाय तब उतार लेना और कुनकुना जानवर को पिला देना। तथा उबली हुई पत्ती दर्द के ऊपर बांध देना।

मुँह-खुरी

कारण

सब से अधिक फैलने वाली यह एक बीमारी है। इससे जानवर मरते तो कम हैं, परन्तु कष्ट बहुत पाते हैं।

लक्षण

प्रारम्भ में जानवर सुस्त दिखाई देता है। मुँह से निरन्तर लार गिरती रहती है। जानवर खाना-पीना बन्द कर देते हैं। दूध देने वाले

जानवर दूध कम देने लगते हैं। चूंकि यह रोग मुँह और खुर दोनों में होता है, इसलिये जानवर लंगड़ाता भी है। मुँह में—पूरे मुँह में छालों का पैदा हो जाना इस की खास पहिचान है। खुरों में जख्म हो जाते हैं। मुँह के छाले फट कर एक दूसरे से मिल जाते हैं। शुरू में जानवर को ज्वर भी होता है जो बाद में कुछ कम हो जाता है।

इलाज

(१) हींग ८ माशा

सरसों का तेल २० तोला

रोग उत्पन्न होने से पूर्व ही हींग और सरसों का तेल मिलाकर सब जानवरों को पिलाना चाहिये।

नोटः—गौशाला में खरगोश पाला जावे तो यह बीमारी नहीं आवेगी। यदि आ भी जावे तो उस खरगोश के कुछ बाल काटकर उस की धूनी दे देने से दूर हो जावेगी।

(२) आक का दुग्ध (आकड़ा या मदार, रुई)

अलसी का तेल

कीमिया सिन्दूर

तीनों को जानवरों के हिसाब से मिलाकर रविवार के दिन प्रातः काल ३ बजे ही जानवरों की पीठ पर (क्रम से ४ अँगुल आगे)। यानी मकडी पर सलाई से एक-एक टीकी लगाना चाहिये।

२५ जानवरों के लिये १ तोला आक का दुग्ध, २ तोला सिन्दूर और ५ तोला तेल पर्याप्त है।

(४) कई लोग नीचे लिखा टोना भी कहते हैं, जिन को विश्वास हो वे प्रत्यक्ष कर के देखें:—

रविवार के दिन रात को ३ बजे ही लाल कपड़े में सब जानवरों का १। सेर गोबर तोल लेना। तेल सिन्दूर को प्रथम मिला लेना और उसमें

ओझीझाड़ा की जड़ को भीगो लेना। सिन्दूर से भीगी ओझीझाड़ा की जड़को १। सेर गोबर में दबाकर के लाल कपड़े में बांध रातको ही जहां घर के सब जानवर निकलते हों, लटका देना।

इसके अलावा जानवर को प्रति दिन अलसी का तेल पिलाते रहना चाहिये। इससे छाले बहुत जलदी अच्छे हो जाते हैं।

कीड़े पड़ना

इस रोग में अक्सर जानवर के मुंह एवं खुरों के बीच कीड़े पड़ जाया करते हैं। इसके लिये निम्नलिखित उपाय काम में लाना चाहिये।

(१) जहरी कौचला २
अलसी-तेल ४० तोला

दोनों को मिला गर्म कर जहां कीड़े पड़ गये हों वहाँ लगाना।

(२) करौंदा की जड़
खोपरे का तेल

जड़ को बारीक पीस तेल में मिला कर लगाने से कीड़े मर जायेंगे।

(३) खटामा की जड़ बारीक पीस कर जख्म पर डालना। कीड़े बाहर निकल आयेंगे।

(४) ढीकामाली और खोपरे का तेल मिलाकर लगाना। इस से जख्म पर मक्खियां नहीं बैठेंगी।

(५) फिटकरी और लकड़ी के कोयलों का पाउडर घाव में भरना।

(६) बड़ी लाजनी ३० तोला लेकर आटे में मिलाना और जानवर को खिलाना। इस से कीड़े मर जाते हैं।

खुर का तिड़क जाना

इस रोग में अक्सर जानवर के अच्छे होने के पश्चात् या पूर्व जानवरों के खुर तिड़क कर फट जाया करते हैं।

इस के लिये नीचे लिखे उपाय काम में लाना चाहिये ।

(१) सीताफल के पत्ते और चूना दोनों को बारीक पीस फटे हुये खुर में भरना ।

(२) भिलावे का तेल लगाना

(३) फटे खुर को गर्म लोहे से दागना ।

मस्सा होना

मुँह-खुरी में अक्सर जानवरों के तन्दुरुस्त होने के बाद खुरों के बीच मस्सा हो जाया करता है । अतः नीचे लिखे उपाय काम में लाना चाहियेः—

(१) सज्जी, चूना, तम्बाखू, चीतावल की जड़ और नीलाथोथा मिलाकर मस्से पर पट्टी बांधना ।

(२) मस्से पर चूने का बिना बुझा कंकड़ रखना और उसपर गर्म पानी डालना ।

(३) मस्से को काट डालना और जला देना ।

सूचनायें

जानवर को खाने के लिये हलकी, पतली और पोषक खुराक देना चाहिये । इस के अलावा वे सब बातें याद रखना चाहिये जो शीतला में बताई गई हैं ।

गर्भपात

लक्षण

गर्भाशय तथा योनि-मार्ग पर सूजन का होना । निश्चित समय से पूर्व ही बच्चे का गिर जाना । गर्भपात के पश्चात् जेर का न गिरना । पेशाब का अति बदबूदार होना ।

इलाज

१. शिवलिंगी के बीज ८

घी २० तोला।

बीजों को बारीक पीस, घी में मिला, गर्भ गिरने से पूर्व पिलाना। इसी मात्रा में प्रति १२ घंटे बाद दूसरी मात्रा देना चाहिए। इस तरह ४-५ दिन देना चाहिए। दवाई देने के पश्चात् गर्भ नहीं गिरेगा।

जिन पशुओं का साधारणतया सदैव गर्भ गिर जाता है उनको:—

२. शिवलिंगी के बीज ४

घी २० तोला

उपर्युक्त विधि से पिलाना चाहिए।

हर मास में यह दवाई देना चाहिए।

धनुर्वात

लक्षण

जानवर बहुत अधिक सुस्त मालूम होता है। कई जानवर लकड़ी की तरह अकड़ जाते हैं। जानवर को बुखार भी होता है। इसमें जानवर भड़कने के लक्षण भी प्रकट करते हैं। श्वास तेज चलने लगता है। साधारणतः दस्त भी बंद हो जाया करते हैं। बच्चों के यह रोग होने पर वे दुग्ध पीना बन्द कर देते हैं।

इलाज

१. अलसिया १० तोला

ठण्डा पानी ३० तोला

बारीक पीस पानी में मिलाना और जानवर को पिलाना।

२. ओझीझाड़ा की जड़ १ तोला आटे में मिलाकर खिलाना।

३. किलहारी का कन्द १ तोला आटे में मिलाकर खिलाना। इस तरह दिन में २ बार खिलाना।

४. असकन्द की जड़ २० तोला दाना में मिलाकर १० दिन तक देना।

५. रोग ग्रस्त स्थान पर दाग लगाना।

खान पान एवं हिदायतें:—अन्य रोगों की तरह।

६. गौलत के बीज ५ नग
सोंट २ तो.
काली मिर्च १ तो.
लौंग ॥ तो.
नमक १ तो.
पानी ४० तो.

उपरोक्त सभी चीजें बारीक करके पानी में उकालना और पानी जब ३० तोला बाकी रहे तब कुनकुना कर के पिलाना।

७. रोगी जानवर को फसली के ऊपर दोनों ओर ३″ लंबे ३।३ दाग लगाने से भी रोग जाता है।

जहरवात या जहरी बुखार

लक्षण

यह रोग मोटे ताजे जानवरों को विशेष होता है।

सर्व प्रथम कण्ठ पर गले के पास एक गांठ उत्पन्न होती है। गांठ का आकार करीब ५-६ इंच गोलाई का होता है। गांठ गर्म मालूम होती है। जानवर का खाना-पीना, जुगाली करना बन्द हो जाता है।

बुखार मामूली होता है। गले पर सूजन होने से श्वास लेने में भी कठिनाई मालूम होती है। कभी कभी इसका आक्रमण स्तनों पर भी होता है।

इलाज

१. सत्यानासी (स्वर्णक्षीरी) १० तोला जड़
गुड़ २० तोला
बारीक पीस गुड़ में मिला जानवर को खिलाना चाहिए।

२. हुलहुल पूरा पौधा १० तोला
आटे में मिलाकर खिलाना।

३. जिस व्यक्ति की सब से छोटी अँगुली और अँगूठे के पास वाली अँगुली लम्बी करने से मिलती हो तो उन से बछड़ी का गोबर लेकर सूजन पर गोल चक्कर बना देना और मध्य में से इस प्रकार 'X' चीर देना।

४. अन्त में सूजन पर गोल दाग लगाना चाहिए। दाग इस प्रकार X लगाना चाहिए।

खुजली

अक्सर देखने में आता है, पशु के गले के बाल उड़े हुए छीदे छीदे से दीखने लगते हैं और पशु किसी वृक्ष अथवा दीवाल से रगड़ता है। ये खुजली के चिन्ह हैं। जो समय पाकर पूरे बदन पर फैल जाती है।

इलाज

(१) मैंसल २ तोला
गन्धक ४ ,,
भिलावा १०
गौघृत ३० तोला

सबको अलग अलग पीसना। शामिल पीसने पर आग लग जाती है। मिलावों को भी अधकच्चरे कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् इनको पकाना चाहिए। इसके लिए ग्राम से बाहर का कोई सुरक्षित स्थान चुनना चाहिए। पकाने के लिए गोबर के कण्डे उपयोग में लाना चाहिए।

सर्व प्रथम मिट्टी का कोरा बर्तन लेकर उसमें घी डाल देना। घी को कण्डों पर गर्म करना। कुछ देर बाद सावधानी से घी में ये सब डाल देना। मैंसल के बाद गन्धक डालना। अन्त में मिलावे डाल देना और पकाना चाहिए। पकाते समय धुंआ शरीर को नहीं लगने पावे। इसके लिए दवाई को हलाने के लिए लम्बा डण्डा उपयोग में लाना चाहिए। या बहुत अधिक लम्बी सण्डसी से काम लेना चाहिए। पकाते समय जब बर्तन से हरे रंग का धुंआ निकलने लगे तब दवाई को पास में रक्खे हुये पानी में डाल देना चाहिए और ठण्डा होने पर जमे हुए घी को निकाल लेना चाहिए। तत्पश्चात् रोगी के लिए उपयोग मे लाना चाहिए। जिस जानवर के खुजली हो उसके शरीर पर दिन में दो बार मालिश करना चाहिए। जो जानवर दवा को चाट जाते हों उनका मुँह बांध देना चाहिए। यह कुचा, आदमी को भी चलती है।

(२) गन्धक ½ तोला
गौदुग्ध ४० ,,
घी ५ ,,

प्रथम गन्धक को घी में पकाना और गन्धक के पकने पर उसमें दूध मिला कर पिला देना।

जिस जानवर के खुजली हो जाय उसको अन्य जानवरों से अलग रखना चाहिए।

दाद (खोड़ा)

यह रोग छोटे बच्चों को अधिक होता है। जो बच्चे तंग जगह में बंधे रहते हैं उनको यह रोग विशेष होता है।

लक्षण

जानवर के शरीर पर गोल गोल चकत्ते से पड़ जाते हैं। चकत्तों का रंग काला होता है। यह रोग अक्सर गर्दन या कानों पर होता है।

इलाज

(१) करञ्ज का तेल	८	तोला
गन्धक	२½	,,

दोनों को मिलाना और गर्म करके लगाना।

(२) करञ्ज का तेल	८	तोला
गन्धक	२	,,
नीलाथोथा	६	माशा

सबको शामिल मिला लेना और गर्म करके लगाना।

जिस जानवर के दाद हो जाय उसको दूसरे जानवरों से अलग रखना चाहिए।

(३) मीठे तेल में कोई भी चीजें तलकर के बचा हुआ तेल उसके शरीर को लगाना।

(४) रविवार को सुबह बायें कान को मुंह के सहारे काला धागा डाल कर बांध देना।

(५) रविवार को मेहतर की झाड़ू रोगी जानवर को लगाना।

पेट-फूलना (आफरा)

कारण

सड़ा, गला, चारा-दाना खा लेने से अक्सर जानवरों का पेट फूल जाता है तथा वर्षा ऋतु के आरम्भ में लालचवश हरा घास अधिक खा जाने से भी पेट फूल जाता है। समय पर पानी नहीं मिलने एवं खाने के बाद ही एकदम अधिक श्रम लेने से भी कभी कभी पेट फूल जाता है।

लक्षण

जानवर बेचैन मालूम होता है। जानवर की बाईं कोख फूल जाती है। फूली हुई कोख को दबाने से पोली पोली ढोल की भांति आवाज़ आती है। पेट में गैस भर जाती है। जानवर बार बार बैठता उठता है। कभी कभी अपनी बाईं कोख की ओर भी देखता है।

इलाज

(१) कड़वी काचरी १
काला नमक ५ तोला
अलसी का तेल ४० ,,

सबको मिलाना और गर्म करके जानवर को पिलाना चाहिए।

(२) अरण्डी का तेल २० तोला
काला नमक ५ ,,

दोनों को गर्म कर जानवर को पिलाना चाहिए।

(३) ~~कड़वी काचरी~~ १
काला नमक २॥ तोला
बकरी का पेशाब ८०

कड़वी काचरी को बारीक पीस लेना और पेशाब में मिलाकर गर्म करना। गर्म होने के बाद कुनकुना रहने पर जानवर को पिलाना।

(४) गुड़ ८० तोला
पानी २४० ,,

दोनों को गर्म कर पिलाना।

(५) मेंढ़ापाती ३० तोला
पानी ६० ,,

मिलाकर गर्म करके जानवर को पिलाना।

(६) दागनाः— दाग इस प्रकार लगाना—

जानवर के दोनों कोखों के नीचे इस प्रकार U दाग लगा देना। जानवर को आराम देना चाहिए। खाने को हलकी-पतली और पोषक खुराक देना चाहिए।

पेट का दर्द

कारण

चारा-दाना अधिक खा लेने से जानवर के पेट में जम जाता है जिससे वह बेचैन रहने लगता है। और पेट में एकदम दर्द होता है। कभी कभी यह दर्द रुक रुक कर चलता है। इसको शूल कहते हैं। जब जानवर सूखा चारा-दाना खाता है और उसको समय पर पानी नहीं मिलता तो उस समय भी जानवर के पेट में दर्द होने लगता है।

लक्षण

खाना-पीना, जुगाली करना बन्द हो जाता है। जानवर बार बार उठता बैठता है। कभी कभी पतला थोड़ा थोड़ा गोबर भी करता है। जानवर अपनी बाई कोख की ओर बार बार देखता भी है।

इलाज

१.	बबूल के कांटे जोड़ी	१०८ (कुटे हुए)
	पत्थर	२१ (साधारण काले रंग के घुले हुए पत्थर)
	सियाल बेटनिया का चूर्ण	५ तोला
	सोंठ	२½ तोला
	पानी	१२० तोला

काढ़ा बनाना। ६० तोला पानी शेष रहने पर नीचे उतार लेना और कुनकुना जानवर को पिलाना।

२.	अदरक	३ तोला
	शिलाजीत	२० तोला
	सियाल बेटनिया चूर्ण	३ तोला
	लौंग	१ तोला
	काली मिर्च	१ तोला
	सेंधा नमक	३ तोला
	पानी	८० तोला

काढ़ा बनाना। ६० तोला पानी शेष रहने पर नीचे उतार लेना और कुनकुना जानवर को पिला देना। काढ़ा छानकर पिलाया जाय। इसके अलावा जानवर को आराम देना चाहिए।

- खाने में बहुत हलकी वस्तु देना चाहिए।

मुँह में के काँटे बढ़ना

कारण

जानवर कभी कभी बहुत गर्म एवं अत्यन्त कड़ी वस्तु खा जाता है। कभी कभी भीतरी गर्मी भी बढ़ जाया करती है और इस तरह मुँह

में काँटे बढ़ जाते हैं। कुछ लोग इन काँटों को "आलों" के नाम से भी सम्बोधित करते हैं। मुख्यतः जिस जानवर को सदैव कब्ज रहती है उसके मुँह में अक्सर ये "आले" बढ़ जाती हैं।

लक्षण

जानवर खान-पान एवं जुगाली करने में कमी प्रकट करता है। मुँह में से लार गिरती रहती है। मुँह में के काँटे बढ़ जाते हैं। मुँह में हाथ डालने पर मुँह बहुत गर्म मालूम पड़ता है।

इलाज

१. जानवर को जुलाब देकर उसका पेट साफ करना।
२. प्रतिदिन सुबह शाम काँटों पर नमक घिसना।
३. नारियल की रस्सी में नमक लपेट उस से काँटों को घिसना।
४. तेज कैंची से काँटों को काट डालना और ऊपर हल्दी एवं मक्खन मिलाकर लगा देना चाहिए।

खान-पान

जानवर को मुलायम घास एवं हल्की पतली पोषक खुराक खाने को देना चाहिए।

दस्त लगना

कारण

अजीर्ण एवं अपचन होने से जानवरों को दस्त लगने लगते हैं।

लक्षण

जानवर बार बार पतला गोबर करता है। जुगाली करना बन्द कर देता है। जिस जानवर को दस्त लगते हैं वह बहुत अधिक कमजोर हो जाता है। जानवर बार बार थोड़ा थोड़ा पानी पीता है।

इलाज

१. प्रथम बहुत हलका जुलाब देकर जानवर का पेट साफ करना चाहिए।

२.	दही	१६० तोला
	भंग	१ तोला
	पानी	४० तोला

तीनों को मथकर पिला देना।

३.	छाछ बघारा	२० तोला
	जली ज्वार	२० तोला
	छाछ	१२० तोला

तीनों को मथकर पिलाना।

४.	शीशम की पत्ती	२० तोला
	पानी	१०० तोला

पत्तों को बारीक बांट लेना और पानी में मिलाकर जानवर को पिलाना।

खान-पान

जानवर को खाने के लिए मुलायम घास देना चाहिए। जहाँ तक बन सके गर्म वस्तु से जानवर को बचाना चाहिए।

शीत-पित्त या पित्ती उछलना

कारण

यह रोग पित्त की खराबी के कारण उत्पन्न होता है। कारण विशेष से पित्त रक्त में मिल जाता है। और शरीर पर जगह २ सूजन आकर चकत्ते से पड़ जाते हैं।

लक्षण

चमड़ी पर जगह जगह मच्छर के काँटे जैसे गोल गोल चकत्ते पड़ जाते हैं। ये चकत्ते २-३ इन्च तक चौड़े होते हैं। जानवर के सारे शरीर पर अत्यन्त खुजली चलती है। शरीर पर चकत्ते बार बार उत्पन्न होते हैं और मिटते हैं।

इलाज

(१) प्रथम जानवर को जुलाब देना चाहिये।

(२) सेंधानमक ३ तोला (बारीक)
सरसों का तेल ३० तोला
काली मिर्च १ तोला (बारीक बांटकरके)
गरम करके पिलाना।

(३) खाकरा (पलासकी) जड़ ४० तोला लेकर पानी में उकालना और उस पानी से जानवर को स्नान कराना।

(४) घुडवच ५ तोला (पीसकर), सरसो का तेल २० तोला, गरम करके पिलाना।

अपचन

कारण

कभी २ जानवर लालचवश अधिक खा जाते हैं जिस से अपचन या बदहजमी हो जाती है। सड़ा-गला और गन्दा चारादाना खाने से भी अपचन हो जाता है। जानवर के जब कभी अधिक खाने में आ जाता है तथा पीने को पानी नहीं मिलता तब भी अपचन हो जाता है।

लक्षण

जानवर सुस्त एवं चिन्तित मालूम पड़ता है।

जानवर जो चारा-दाना खाता है वह पूरा हजम नहीं होता है और दिन प्रति दिन अधिकाधिक कमजोर होकर सूखता चला जाता है। जुगाली करने में अनियमितता होती है। पानी अधिक पीता है।

इलाज

(१) तेल मीठा ३० तोला। इसको ३० तोला गर्म पानी में मिलाकर जानवर को पिलाना चाहिये। पानी को गर्म करते समय उसमें थोड़ा नमक काला (३ तोला) डाल देना चाहिये।

(२) गुड़ २० तोला
गौलन के बीज १०
आम्बाहलदी ५ तोला
गरार बीज ५
फिटकरी २ तोला
पानी ६० तोला
काला नमक ५ तोला
गर्म कर कुनकुना पिलाना चाहिये।

(३) बत्तीसा गर्म पानी के साथ देना चाहिये।

पेट में कीड़े पड़ना

कारण

यह रोग छोटे बछड़ों को अकसर ज्यादा होता है।

सड़ा-गला एवं गन्दा चारा-दाना खाने से यह रोग होता है। कभी कभी जानवर कीड़े पड़ा हुआ पानी पी जाता है और इस तरह पेट में कीड़े पड़ जाते हैं।

लक्षण

जानवर भली प्रकार खाता-पीता रहता है और दुबला होता जाता है। गोबर में छोटे छोटे कीड़े मिलते हैं। जानवर को दस्त लगते हैं जो मट-मैले रंग के होते हैं।

इलाज

(१)	किलहारी की जड़	१/२ तोला
	काला नमक	५ तोला
	करौंदा की जड़	१ तोला
	गुड़	२० तोला
	पलाश के बीज	१/२ तोला
	पानी	१२० तोला

सबको बारीक पीस गर्म करना और कुनकुना जानवर को पिलाना चाहिये।

(२)	नीम की पत्ती	५ तोला
	काला नमक	५ तोला
	गुड़	२० तोला
	दतौनी की जड़	५ तोला
	अमलतास का गूदा	२ तोला
	पलाश के बीज	१/२ तोला
	पानी	१२० तोला

सबको बारीक पीस गर्म करना और कुनकुना रहने पर जानवर को पिलाना चाहिये।

(३) बत्तीसा १० तोला गर्म पानी के साथ देना चाहिये।

खान-पान

जानवर को हलकी पतली और पोषक खुराक देना चाहिये।

जानवर से श्रम न लिया जाय। और उसे साफ कुएँ का पानी पिलाया जाय।

पेचिश

कारण

बदहज़मी होने से अक्सर पेचिश हो जाती है।

लक्षण

जानवर बार बार गोबर करने की इच्छा करता है और थोड़ा थोड़ा रक्त-मिश्रित पतला मल बाहर निकलता है। जानवर को दस्त कट कट कर आते हैं।

इलाज

(१) मरोड़ फली	१०	तोला
सहाजीरा	१०	,,
छाछ	८०	,,

उपर्युक्त दोनों वस्तुओं को बारीक पीस छाछ में मिला छानकर जानवर को पिलाना चाहिए।

खान-पान और सूचनायें:— जानवर को अधिक गर्म वस्तु नहीं खिलाना चाहिए। जानवर को आराम देना चाहिए। इसके अलावा हलकी, पतली और पोषक खुराक देना चाहिए। घास बहुत मुलायम डालना चाहिए।

जुकाम

कारण

यह कोई रोग नहीं है; लेकिन एक प्रकार का रोग का लक्षण है। गर्म जगह से ठण्डी जगह में और ठण्डी से एकदम गर्म जगह में जानवर को बदलने से अक्सर जुकाम हो जाता है। कड़ा श्रम करके आते ही ठण्डा पानी पिला देने से भी जुकाम हो जाता है।

लक्षण

जानवर सुस्त रहता है। खाना, पीना, जुगाली करना कम करता है। बार बार छींकें आती हैं। नाक से पतला पतला पानी निकलता है। कभी कभी हलका ज्वर भी चढ़ आता है।

इलाज

(१) नावा २ तोला
नमक १ ,,
पानी ४० ,,
उबाल कर दें।

(२) सप्तपरण पत्ते १ तोला
तुलसी के पत्ते १ ,,
नमक १ ,,
पानी ४० ,,
उबाल कर दें।

इसके अलावा लहसुन, नमक, अदरख और पानी या काली मिर्च, लौंग, चाय, काला नमक और पानी को भी ऊपर लिखानुसार दे सकते हैं।

खाँसी

कारण

प्रायः बदहजमी एवं सर्दी-गर्मी के कारण अक्सर खाँसी चलती रहती है। यह भी कोई रोग नहीं है; एक प्रकार का किसी रोग विशेष का लक्षण है।

लक्षण

जानवर सुस्त रहता है। खान-पान में कमी प्रकट करता है। जुगाली कम करता है। रोयें खड़े हो जाया करते हैं। कभी कभी ज्वर भी हो जाता है। अक्सर कब्ज रहा करती है। नाक एवं आँख से पानी गिरता है। श्वास की गति बढ़ जाती है।

इलाज

१. साल के छिलके ५ तोले और बिनौले आधा सेर बिना भिगोए ही जानवर को खिलावें।

२. कलई के चूने का पानी १० तोला
फुलाया हुआ सुहागा ४ आनेभर
मिलाकर जानवर को पिला दें।

३. कलई का चूना १ तोला
फुलाई हुई फिटकरी १ तोला
छाछ २० तोला मिलाकर देवें।

निमोनिया

कारण

जलवायु में एकदम परिवर्तन होने से अक्सर निमोनिया हो जाता है। पसीने एवं बुखार की हालत में बहुत ठण्डा पानी पीने से हवा लग जाने से या वर्षा में भीगने से भी यह रोग हो सकता है।

लक्षण

जानवर बहुत सुस्त एवं चिन्तित दिखाई देता है।

जानवर का खाना पीना और जुगाली करना अक्सर बन्द हो जाता है। रोयें खड़े हो जाते हैं। जुकाम और खांसी के सब लक्षण इसमें

दिखाई देते हैं। जानवर के शरीर पर कँपकँपी होती है। साधारण ज्वर हर समय बना रहता है। आँखें लाल हो जाती हैं। नाक से बलगम निकलता है। जानवर की नाड़ी एक मिनट में ८० से १०० तक चलने लगती है। जानवर उसी बाजू पर दबाव देकर बैठता है कि जिस बाजू पर जानवर के फेफड़े में दर्द होता है। बार बार दांत पीसता है। रोग शुरू होने के बाद ६-७ दिन तक बीमारी बढ़ती है। जब ज्वर एकदम कम हो जाय और श्वास जानवर सहूलियत से लेने लगे तो समझना चाहिए कि तबियत कुछ विशेष खराब है। इस प्रकार जानवर काफी कष्ट पाता है। दिन प्रतिदिन कमजोर होता जाता है। तत्पश्चात् कुछ दिन में जानवर मर जाता है।

इलाज

१. जानवर को बन्द कमरे में रखना। जानवर के शरीर पर घास रखकर उसको अच्छा बढ़िया साफ कम्बल ओढ़ाना।

२. गुड़-बच	५ तोला
गोलन फल	२ तोला
काली जीरी	५ तोला
सैंधा नमक	५ तोला
लहसुन	५ तोला
गुड़	१० तोला
पानी	१२० तोला

सब वस्तुओं को बारीक पीसना और पानी में मिलाकर काढ़ा बनाना। ५० तोला पानी शेष रहने पर उतार देना और बिना छाने ही कुनकुना जानवर को पिला देना चाहिए।

३.	अजवायन	२½ तोला
	सोंट	२ तोला
	मेथी	४ तोला
	लहसुन	३ तोला
	अलसिया	४ तोला
	गुड़	४० तोला
	पानी	८० तोला

ऊपर लिखानुसार काढ़ा बनाना और ५० तोला पानी शेष रहने पर उतारकर बिना छाने ही पिला देना।

४.	सुहागा	½ तोला
	लौंग	१ तोला
	काली मिर्च	१ तोला
	शराब	१० तोला

सब को बारीक पीस शराब में मिलाकर पिला देना चाहिए।

५. अमृत धारा और सरसों का तेल मिलाकर पसलियों पर मालिश करना चाहिए।

खान-पान

दवाई पिलाने के ३-४ घण्टे बाद तक जानवर को पानी नहीं पिलाना चाहिए। जब भी पानी पिलाया जाय गर्म पिलाया जाय। खाने के लिए चावल का माण्ड या अलसी की कुलकुनी चाय देना चाहिए। मुलायम घास एवं हलकी पतली पोषक खुराक बराबर देते रहना चाहिए।

सूचनाएं

जानवर के शरीर पर हवा का झोंका न लगने पाए. जानवर को जहां तक बन सके अधिक ढीली और पतली दवा नहीं पिलाना चाहिए। नाक द्वारा दवाई जहाँ तक बने नहीं पिलाना। रोगी को निरोगियों से अलग रखना।

दमा

अक्सर अधिक दिन तक अपचन रहने से दमा रोग हो जाता है।

जानवर को अधिक दौड़ाने से एवं अधिक या अनियमित श्रम लेने से भी श्वास की गति में अन्तर आ जाता है।

लक्षण

जानवर का सुस्त रहना एवं काला पड़ जाना।

जल्दी जल्दी और खींच खींच कर श्वास लेना।

नाक से बलगम गिरना। निरन्तर खांसी चलना।

इलाज

दमा दो प्रकार का होता है :—

(१) सर्दी का दमा और (२) गर्मी का दमा।

गर्मी के दमा के लिये

(१) दही ८० तोला
शक्कर ४० तोला
दोनों को मथकर जानवर को पिलाना चाहिये।

(२) दूध ८० तोला
मुर्गी का अंडा १

मिलाकर जानवर को खिलाना। इस तरह २ दिन तक शाम सुबह पिलाना।

सर्दी के दमा के लिये

(१) सरसों का तेल २० तोला
काला नमक १० तोला
हींग १ तोला

सबको गर्म कर जानवर को पिलाना।

(२) गुड़ २० तोला
हलदी २ तोला
काला नमक २ तोला
गौलन के बीज ½ तोला
पानी

सबको मिला गर्म कर जानवर को पिलाना चाहिये।

खान-पान

मुलायम घास देना चाहिये।

हलकी पतली पोषक खुराक देना चाहिये

पानी ताजा और कुएँ का पिलाया जाय।

सूचनायें

जानवर को कुछ समय आराम देना।

जानवर को अगर बन सके तो खुले स्थान में न रख बन्द मकान में रक्खा जाय।

नोट:—यह दवा एक सप्ताह तक देना जरूरी है।

पेशाब में खून आना

कारण

अचानक किसी जगह घातक चोट लगना।

जहरीली वस्तु का पेट में चला जाना।

इलाज

(१) गेहूं का मैदा ४० तोला
पानी ८० तोला

दोनों को मथकर जानवर को पिलाना चाहिये।

(२)	बबूल की पत्ती	२० तोला
	हल्दी	२ तोला
	चन्दन का तेल	½ तोला
	पानी	८० तोला

बारीक पीस छानकर पानी में मिला देना और सुबह शाम जानवर को पिलाना चाहिये।

खान-पान

कब्ज करनेवाली वस्तु जानवर को न खिलाना; जानवर को शीशम की पत्ती खिलाना।

पेशाब का रुक जाना

कारण

गुर्दों की कमजोरी के कारण एवं पथरी की वजह से पेशाब बन्द होता है। सूखा चारा अधिक खाने और बाद में कम पानी मिलने पर भी यह दर्द हो सकता है।

लक्षण

जानवर का अत्यधिक बेचैन होना।

पेशाब का रुक जाना।

जानवर का बार बार उठना-बैठना।

पेशाब करने का बार बार प्रयत्न करना और पेशाब नहीं आना।

इलाज

(१)	मेंहदीपाती	२० तोला
	कलमी शोरा	१ तोला
	शीतल चीनी	५ तोला
	पानी	८० तोला

बारीक पीस सबको मिलाना और जानवर को पिला देना चाहिये।

(२) कांस के फूल	२ तोला
टेशूफूल (पलाश के फूल)	१० तोला
पानी	४० तोला

बारीक पीस जानवर को पिलाना चाहिये।

दाग लगाना

दाग नीचे लिखानुसार लगावें।

(१) प्रथम पीठ पर मकड़ी से चार अँगुल आगे गर्दन की ओर दाग लगावें। दाग लोहे को गर्म करके लगाना चाहिये।

(२) दूसरे दाग आगे के दोनों पैरों के बीच जो उभरा हुआ भाग रहता है; उसपर लगावें। इस जगह दाग सब्बल के लगाना चाहिये।

(३) इंद्रजव	४० तोला
पानी	८० तोला

इन्द्रजव बारीक पीस करके ठण्डे पानी के साथ देना।

सांड के फोतों का सूज जाना (पोतों का)

कारण

अचानक घातक चोट लगना। एक विशेष प्रकार के कीटाणुओं के आक्रमण से भी सूजन आ जाती है। वादी आने से भी सूजन आती है।

लक्षण

जानवर का बेचैन रहना। पशु अपने पीछे वाले पैर फैलाकर खड़ा रहता है। साधारण ज्वर भी कभी कभी आता है।

इलाज

(१) नीम के पत्तों को पानी में उबाल कर कुनकुने पानी से फोतों पर सेक करना चाहिए।

(२) टीकामाली और खोपरे का तेल मिलाकर सूजन पर लगाना।

मिरगी

यह रोग अक्सर छोटे बच्चों में अधिक होते देखा गया है। पेट में हरवक्त गड़बड़ रहने से यह रोग अधिक होता है। कभी कभी पेट में कीड़े पड़ने से भी यह रोग होता है।

लक्षण

अचानक जानवर कांपने लगता है।

गर्दन, पैर एवं सारा शरीर एकदम अकड़ जाता है।

रोग का आक्रमण होते ही जानवर अचानक गिर पड़ता है।

इलाज

(१) सर्व प्रथम जानवर को तेज़ जुलाब देकर उसका पेट साफ़ करना चाहिए और तत्पश्चात् दूसरा इलाज करना चाहिए।

(२) जानवर के गिरते ही एकदम उसको औंधा जूता सुंघाना।

(३) चिरौंजी का तेल १० तोला
तारपीन का तेल ३ ,,
दोनों को मिलाकर जानवर को देना चाहिए।

(४) ढांढण के बीज १० तोला
मेथी के बीज १० ,,
पँवार के बीज १० ,,
सेंधा नमक ३ ,,

सबको बारीक पीस लेना और मिलाकर पानी में काढ़ा बनाकर जानवर को देना चाहिए।

(५) नीम की सूखी पत्ती ३ तोला
काली मिर्च १ ,,
पानी २० ,,

बारीक पीसकर पानी में घोल सबको एक कर लेना और पश्चात् जानवर को पिलाना।

खान-पान

दवाई देने से पूर्व ४-५ घण्टे तक जानवर को भूखा रखना चाहिए। तत्पश्चात् जानवर को हलकी और पोषक खुराक देना चाहिए। कब्ज करने वाला चारा-दाना जानवर को न दिया जाय। जहाँतक बन सके जानवर को कम खिलाया जाय और पेट साफ रखा जाय।

सूचनाएँ:— कब्ज न होने देना। बांधने का स्थान बिलकुल साफ रखना चाहिए। जानवर को आग-पानी से बचाना चाहिए। चूंकि अन्दर गिरकर अपने सारे शरीर को जला सकता है। अगर पानी में गिर पड़ा तो डूबकर मर जायगा।

बुखार

कारण

साधारणतया मौसम में एकदम परिवर्तन होने के कारण और उसका जानवर पर बुरा असर पड़ने से अक्सर जानवरों को बुखार चढ़ जाता है। खाने-पीने में गड़बड़ होने से एवं हर वक्त कब्ज रहने से भी जानवर बुखार के शिकार बन जाते हैं। इसके अलावा कई रोगों में भी जानवरों को ज्वर आया करता है।

लक्षण

जानवर सुस्त रहता है। शरीर अत्यधिक गर्म प्रतीत होता है। श्वास की गति बढ़ जाती है। खाना-पीना और यहाँ तक कि जुगाली करना बन्द हो जाता है। शरीर के बाल खड़े हो जाते हैं। नाड़ी बहुत तेज चलती है। जानवर के पेशाब का रंग लाल होता है।

इलाज

१. जानवर को बन्द कमरे में रखना और एक जुलाब देना। इसके बाद नीचे लिखी दवा देना चाहिए।

२.	नावा	२ तोला
	नमक	५ तोला
	कुटक	२ तोला
	चिरायता	२ तोला
	पानी	१२० तोला

काढ़ा बनाना और आधा रहने पर नीचे उतारकर छानकर कुनकुना जानवर को पिला देना चाहिए।

३.	लाल कनेर की जड़	१ तोला
	गटार के बीज	२ तोला
	हलदी	२ तोला
	कुटक	३ तोला
	चिरायता	३ तोला
	पानी	१०० तोला
४.	कड़वी काचरी की जड़	१ तोला
	आम्बा हलदी	२ तोला
	गुड़	२० तोला
	पानी	१०० तोला

काढ़ा बनाना और आधा रहने पर छानकर कुनकुना पिला देना।

खान-पान

हरी और मुलायम घास देना चाहिए।

चाँवल का माण्ड एवं अलसी की चाय अवश्य पिलाई जाय।

कुएँ का ताजा पानी ही पिलाया जाय।

सूचनाएं

जानवर को झूल ओढ़ाकर रखना चाहिए और हवा के झोंकों से बचाना चाहिए। अगर अधिक तेज ज्वर हो तो उसमें जुलाब न दिया जाय। ठण्डा पानी भूलकर भी नहीं पिलाना चाहिए वरना नीमोनिया हो जाने का भय रहता है।

बिल्ल

कारण

इस रोग में जानवर का शरीर जकड़ जाता है। इस रोग के पैदा होने का कारण एक प्रकार का सफेद-झागदार कीड़ा है जो अक्सर वर्षा ऋतु में हरे घास पर पाया जाता है। घास के साथ जानवर इस सफेद झागदार कीड़े को खा जाता है और यह रोग उत्पन्न हो जाता है। कीड़ा नाक में जाकर अटक जाता है।

लक्षण

जानवर सुस्त एवं चिन्तित मालूम होता है। खाना-पीना, जुगाली करना बन्द हो जाता है। जानवर का शरीर अकड़कर लकड़ी के सदृश बन जाता है। मुँह से झागदार फेनयुक्त पानी निकलता है।

इलाज

१. बाघ नखे के पत्तों का २ तोला रस ५ तोला पानी में नाक से पिलावें।
२. प्याज का रस १ तोला लहसुन की कली २ नग पानी ५ तोला नाक से पिलावें।
३. कड़वी तुम्बी की बेल सिर पर बांधना चाहिए।
४. तम्बाकू का रस और पानी नाक से पिलाना चाहिए।

गठिया या जोड़ों का दर्द

कारण

जानवर के शरीर में रक्त में किसी प्रकार की खराबी उत्पन्न हो जाने के कारण यह रोग उत्पन्न होता है। खराब चारा-दाना और गन्दा पानी पीने से भी यह रोग उत्पन्न होता है।

लक्षण

जानवर अत्यन्त सुस्त मालूम होता है। खाना-पीना और जुगाली करना क्रमशः बन्द करता जाता है। जोड़ों और पुट्ठों पर सूजन आ जाती है। जोड़ों पर सूजन आती है और उतर जाती है। इस तरह सूजन आती है और उतरती है और यह क्रम कई दिन तक चलता रहता है। सूजन एक जोड़ से दूसरे जोड़ पर चली जाती है और कुछ दिन बाद पुनः उसी जोड़ पर वापस चली आती है। कभी-कभी ज्वर भी चढ़ता रहता है।

इलाज

१. सामर बेला	४० तोला
गिरधान	४० तोला
नागोरी असकन्ध	४० तोला
काला कुड़ा	४० तोला

इन सब को बारीक पीसकर इनका चूर्ण बना लेना चाहिए और इस चूर्ण में से १० तोला लेकर ३० तोला गर्म पानी के साथ रोगी को देना चाहिए।

२. मेथी	२० तोला
पुवाड़िया के बीज	२० तोला
काला नमक	५ तोला
पानी	२४० तोला

सब को बारीक बाँट लेना चाहिए और पानी मिलाकर पकाना चाहिए। जब अच्छा पक जाय, जानवर को खिला देना चाहिए।

३. सामर बेला १० तोला
गोदुग्ध ८० तोला

दोनों को मिलाकर जानवर को देना चाहिए। इस तरह १ मास तक देना चाहिए।

४. दागना
जोड़ों पर जहाँ सूजन आ जाय, खड़े दाग लगाना चाहिए।

खान-पान

खाने के लिए जानवर को हरी मुलायम घास देना चाहिए। पीने के लिए कुनकुना या ताजा कुएँ से निकाला पानी ही जानवर को पिलाना चाहिए। जानवर को द्विदल धान्य की चरी एवं दाना नहीं देना चाहिए।

बच्चा गिरा देना

कारण

अक्सर अत्यधिक कमजोर मादा जानवरों में कारण विशेष से निश्चित समय से पूर्व बच्चा गिर जाता है। जानवर को दौड़ाने, डराने कूदाने से भी बच्चा गिर जाता है। जानवरों के आपस में लड़ने और लड़ने पर घातक चोट लगने से भी जानवर हमल गिरा देते हैं।

कभी कभी बिना किसी कारण के भी जानवर बच्चा गिरा देता है और एक जानवर के गिराने पर अन्य जानवर भी अचानक बच्चे गिराने लगते हैं ऐसी हालत में इस रोग को 'छुतदार गर्भपात' समझना चाहिए। छुतदार गर्भपात होने पर छुतदार गर्भपात का इलाज करना चाहिए और कारण विशेष से गर्भपात होने पर साधारण गर्भपात का इलाज करना चाहिए।

लक्षण

जानवर निश्चित समय से पूर्व ही गर्भ गिरा देता है।

इलाज

(१) सर्व प्रथम जब जानवर गर्भ गिराने के निशान प्रकट करे तो तुरन्त ऐसे जानवर को अन्य जानवरों से अलग कर लेना चाहिये।

(२) शिवलिंगी के बीज ८
दुग्ध ४० तोला

बीजों को बारीक पीसलें और दूध में मिलाकर दें।

(३) कढ़ई का गोंद २० तोला
पानी १ सेर
गोंद को गला कर दें।

(४) मिश्री १० तोला
घी २० तोला मिलाकर दें।

जेर न गिरना

कारण

निरोग जानवरों में जनने के बाद अक्सर १०-११ घण्टे के बाद जेर बाहर निकल आती है। कमजोर एवं रोगी जानवरों में जेर अक्सर देर से गिरती है। कभी कभी ४८ घण्टे तक जेर अन्दर रह जाती है। जेर को जहाँ तक बन सके जल्दी से जल्दी बाहर निकाल देना चाहिए।

लक्षण

जेर नहीं गिरने तक जानवर सुस्त रहता है।
चारा-दाना ठीक ढंग से नहीं खाता है।
योनि मार्ग से नापसन्द दुर्गन्ध आती है।
कभी कभी जेर के छोटे छोटे टुकड़े टूटकर बाहर आते हैं.

इलाज

(१) फेफर की पत्ती या छाल ८० तोला
गुड़ २० तोला
पानी २४० तोला

काढ़ा बनाना। आधा पानी रहने पर उतार लेना और छान कर कुनकुना जानवर को पिला देना।

(२) तिल्ली का तेल ४० तोला कुनकुना गर्म कर पिलाना चाहिये।

(३) असगंध ५ तोला
अजवायन १० तोला
बांस की पत्ती १० तोला
सोंठ २ तोला
गोदुग्ध १६० तोला
गुड़ २० तोला

कुनकुना गर्म करना और जानवर को पिला देना।

(४) अदरक ५ तोला
गौलन के बीज १ तोला
अजवायन १० तोला
गुड़ २० तोला
गोदुग्ध १६० तोला

ऊपर लिखानुसार पिला देना।

(५) जानवर को गूलर के फल खिलाना चाहिये।

(६) दवाइयां देने पर भी अगर जेर न गिरे तो हाथ से निकालना चाहिए। इससे जानवर को बहुत तकलीफ होती है। जहाँ तक हो यह प्रयोग न करें। हाथ के नाखून काट लेना चाहिए और हाथ को कोहनी

तक तेल या वेसलीन से चिकना कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् जहाँ जहाँ चिपक रही हो अँगूठे के पास वाली अँगुली से छुड़ाते जाना चाहिए और जेर को निकाल लेना चाहिए।

खान-पान

गाय को हलकी पतली और कुनकुनी वस्तु देनी चाहिए।

घास बहुत मुलायम देना चाहिए।

सफाई की ओर विशेष ध्यान रक्खा जाय।

स्तनों का सूज जाना

कारण

यह रोग अक्सर अधिक दुग्ध देने वाले जानवरों को होता है।

जानवर जब जनता है तो वह अत्यधिक कमजोर हो जाता है। जानवर कमजोर हो जाता है और "हेवान" में दुग्धोत्पादन क्रिया जोरों से होने लगती है। ऐसी हालत में कमजोर जानवर के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है।

इस रोग में हेवाना और स्तन दोनों सूजते हैं।

इस के अलावा गन्दी जगह में बैठने, खराब हवा लगने, असमय दुग्ध निकालने और हेवाना और स्तनों पर चोट लगने से भी यह रोग उत्पन्न होता है। एक प्रकार के विषैले कीटाणुओं के कारण भी यह रोग उत्पन्न होता है और ऐसी हालत में यह रोग छुतदार समझा जाता है।

लक्षण

हेवाना सूज कर उनका रंग लाल-सा हो जाता है।

प्रथम स्तनों से दूध कम निकलता है और तत्पश्चात् सड़ा और गन्दा नापसन्द दुर्गन्ध वाला दुग्ध निकलता है। कुछ समय बाद पीप और रक्त आने लगता है।

जानवर अपने पीछे वाले पैर फैलाकर खड़ा रहता है।

जानवर बैठना चाहता है; परन्तु बैठा नहीं जाता है।

इलाज

जहाँ तक बन सके इस रोग को उत्पन्न ही नहीं होने देना चाहिए। इसके लिए जानवर के हेवाना एवं स्तनों की भली प्रकार देख भाल करना चाहिये। दुग्ध-दोहन के समय दुग्ध पूरा पूरा निकालना चाहिए। दुग्ध-दोहन के बाद सप्ताह में २ बार स्तनों पर घी अवश्य लगाते रहना चाहिये।

(१) प्रथम नीम के पत्ते और पानी को उबालना चाहिये और इस पानी को कुनकुना रखकर हेवाना एवं स्तनों पर सेक करना चाहिये।

(२) आम्बा हलदी
फिटकरी
सेंधा नमक
गौघी (गाय का घी)

बारीक पीस कर घी में मिलाना चाहिये और गर्म कर के कुन-कुना रहने पर हेवाना एवं स्तनों पर लेप करना चाहिये।

खान-पान

गाय को ऐसी खुराक देना चाहिये जो हलकी हो और जिससे दुग्धोत्पादन कम मात्रा में हो। क़ब्ज करने वाली कोई वस्तु नहीं दी जाय। ताजा पानी पिलाना चाहिये और जानवर को पूर्ण आराम देना चाहिये।

बच्चेदानी का बाहर निकल आना

कारण

प्रजनन अवस्था के अत्यधिक पास आ जाने पर वृद्ध गायों में एवं कमजोर गायों में बच्चादानी बाहर निकल आती है।

लक्षण

प्रजनन अवस्था के पूर्व या बाद में जब कि जानवर जेर या बच्चे को बाहर निकालने के लिए जोर लगाता है: बच्चादानी अक्सर बाहर आ जाया करती है।

इलाज

बच्चेदानी के बाहर निकलते ही शराब या सुरजमुखी पौधे के उबले पानी को ऊपर छिड़क कर सिकोड़ना चाहिए और बहुत सावधानी से सफाई का खयाल रखते हुए अन्दर डाल देना चाहिए। बच्चेदानी को अन्दर डालने से पहिले नीम के पानी से धो लेना चाहिए। बच्चेदानी को अन्दर डालकर रस्सियों का सहारा दे देना चाहिए ताकि पुनः बाहर न निकल जाय।

(१) काली मिर्च ५ तोला
गाय का घी २० ,,

मिर्च को बारीक पीस लेना चाहिए और घी में मिलाकर पिला देना चाहिए। ८ दिन तक हर रोज देना।

(२) अमर बेला ५ तोला
नीम-गिलोय ५ ,,
पानी के साथ देना चाहिए।

(३) दही ४० तोला
घृत कुमारी का गूदा (गंवार पाठा) २० तोला
गूदा पीसकर दही में मिलाकर खिलाना।

(४) मसूर की दाल ५ तोला
दही ८० ,,

दालको जलाकर बारीक करके दहीके साथ कुछ पानी डालकर देना।

खान-पान

जानवर को मुलायम हरी घास एवं हल्की, पतली और पोषक खुराक दी जानी चाहिए। इसके अलावा जानवर को बांधकर रखना चाहिए और पूर्ण आराम देना चाहिए। सफाई की ओर विशेष खयाल रखना चाहिए।

गाय का गर्भधारण न करना

कारण

साधारणतः अधिक कमजोर जानवर निश्चित समय पर गर्भधारण नहीं किया करते हैं। कुछ जानवर अपने शरीर पर चर्बी बढ़ा लेते हैं और गर्भधारण नहीं करते हैं।

लक्षण

गाय का संयोग-इच्छा प्रकट नहीं करना और इस ओर से पूर्ण उदासीन रहना।

इलाज

जानवर को "E" प्रकार का खाद्योज अधिक मात्रा में देना चाहिए और अगर कमजोर हो तो तय्यार करना चाहिए।

(१) छुहारे खारक ४ सेक कर जानवर को देना चाहिए। ८ दिन तक देना।

(२) पलाश के पत्तों के पास की गांठ या २ बीटणी लेकर आटे में मिला लेना चाहिए और ४ दिन तक जानवर को खिलाना चाहिए।

(३) निसंग या ४ गुञ्ज लेकर आटे में जानवर को खिलाना चाहिए। २ रोज देना।

(४) सरसों का तेल २० तोला ८ दिन तक पिलाना चाहिए।

(५) बबूल के काँटों में रहने वाला कीड़ा ४ दिन तक आटे में मिलाकर जानवर को खिलाना चाहिए।

(६) जानवर को भिलावे देना चाहिए। ४ भिलावे आटे के साथ ४ दिन तक देना।

(७) जानवर को ४० तोला तेल प्रतिदिन खिलाया जाय। ४ दिन तक।

खान-पान

जो जानवर अधिक कमजोर हों उनको मोटा बनाया जाय। जिन पर अत्यधिक चर्बी चढ़ गई हो उनको उनसे श्रम लेकर कमजोर बनाया जाय। खुराक हलकी दी जाय।

गाय का बार बार गाभिन होना

कारण

अगर जानवर को अधिक मात्रा में गर्म वस्तुएं खिलाई जायँ तो उनमें यह खराबी पैदा हो सकती है। साँड़ में कुछ अवगुण होने पर भी ऐसा हो सकता है।

लक्षण

जानवर का बार बार गर्म होना और गर्भ धारण नहीं करना।

इलाज

जानवर के गर्भ धारण करते ही यानी संयोग होते ही गाय को ४-५ पलटे देना चाहिए। इसके लिए प्रथम गाय को जमीन पर लिटा दिया जाय और तत्पश्चात् उसको गुडीन्दे या पलटे दिए जायं। इस प्रकार पलटे देने से गर्भ रह जाता है। तत्पश्चात्ः—

१.	असली सिन्दूर	½ तोला
	गाय का दूध	१० तोला
	पीली मिट्टी	२ तोला
	पानी	१० तोला

मिट्टी को पानी में घोलकर छान लेना और तत्पश्चात् सब को मिलाकर दे देना।

२.	घी	४० तोला
	कत्था	१० तोला
	केले की जड़ का रस	१० तोला

सब को मिलाकर देना चाहिए।

खान-पान

जानवर को उत्तेजक पदार्थ नहीं खिलाना चाहिए।

३. गाय के कान थोड़े थोड़े काट देना चाहिए उस से वह दुबली होकर गर्भ धारणा कर सकती है।

हड्डी पर चोट लगना और टूट जाना

कारण

निम्नलिखित कारणों से हड्डी टूट जाती है।

हड्डी पर अचानक घातक चोट लगना।

पत्थर या लाठी का घातक मार लगना।

जानवरों के आपस में लड़ने से एवं पैर फिसल जाने से अकसर हड्डी टूट जाती है।

लक्षण

जहाँ से हड्डी टूट जाती है वहाँ दर्द होता है और सूजन आ जाती हिलाने पर कट कट आवाज आती है। टूटी जगह को इधर-उधर घुमा फिरा सकते हैं।

इलाज

१. सर्व प्रथम हड्डी को यथा स्थान शीघ्र जमा देना चाहिए। तिनस की अन्तर छाल बारीक पीस उसमें गोमूत्र मिला कपड़े की पट्टी के ऊपर २ सूत मोटा लेप लगाकर वह टूटे स्थान पर बांध देना चाहिए तत्पश्चात् बांस की खमचियां मुलायम डोरे से टूटे स्थान पर कसकर बांध देना चाहिए। खमचियों को कपड़ा लपेट लेना चाहिए। मुलायम डोरे के लिए सन के बारीक डोरे उपयोग में लाये जा सकते हैं। पट्टी बांधने के बाद पट्टी पर दिन में २ बार खूब गोमूत्र छिड़कना चाहिए और इस प्रकार सदैव पट्टी को तर रखना चाहिए। यह पट्टी १ मास तक टूटे स्थान पर यथावत् बंधी रहनी चाहिए। पट्टी बाधने के बाद अगर टूटे स्थान से दुर्गन्ध आने लगे तो पट्टी खोलकर नीम के पानी से घाव को खूब धोना चाहिए। तत्पश्चात् पुनः उपर्युक्त विधि से पट्टी बांध देना चाहिए। पट्टी बदलते समय सब चीजें नई ली जानी चाहिए।

नोट:—प्लास्टर का कपड़ा आवश्यकतानुसार लम्बा और गोलाई में पैर की गोलाई से सवाया हो। खमचियां कपड़े से २ इन्च छोटी होना चाहिए।

१. टूटे स्थान पर केवल खमचियां बाध देने से भी हड्डी जुड़ती है।

३. तेल सिन्दूर को मिलाना चाहिए और टूटे स्थान पर लगाना बाद में वहाँ आदमी के बाल रखना चाहिए। उनपर पट्टी बांधना चाहिए। और बाद में हररोज सुबह और शाम को तेल ५ तोला डालना चाहिए। तेल अलसी का ही उपयोग में लाना चाहिए।

(४) ईंट से बांधना:

प्रथम पक्की ईंट को चूर्ण सदृश बना लेना चाहिये और तत्पश्चात् कपड़े के दो तह लगाकर बुरादे को उस में भर लेना एवं टूटे स्थान पर

मुलायम डोरी से कस कर बांध देना चाहिये। इस के बाद ऊपर लचलची खमचियां बांध देना चाहिये। इस प्रकार बांधने के बाद दिन में १ बार उस पर नीमका पानी छींटना और १ बार तेल खोपरे का छींटना चाहिये। इस पट्टी को भी उपर्युक्त प्रकार से करीब १ मासतक बंधी रखना चाहिये।

(५) केवल टूटे स्थान पर कपड़े की पट्टी बांध देने से भी हड्डी भली प्रकार जुड़ जाती है। खमचियां ऊपर लिखानुसार अच्छी होनी चाहिये।

(६) इस के अलावा जिस जानवर की हड्डी टूट जाय उसको नीचे लिखी दवाइयां खाने को देना चाहिये।

[क] झिनझिनी की जड़ की छाल १० तोला
गौदुग्ध ४० तोला

बारीक पीस कर जड़ को दुग्ध में मिला लेना चाहिये और सुबह शाम इसी मात्रा में ५ दिन तक जानवर को देना चाहिये। इसके बाद में,

[ख] हाड जोड़ हरी २५ तोला
गौदुग्ध ४० तोला

हाड़ जोड़ को कूटना चाहिये और दूध से धोकर निचोड़ लेना और कुच्चा फेंक देना चाहिये। इस प्रकार ३ बार करना चाहिये। यह दवा ४ दिन तक पिलाना चाहिये। इस के बाद,

[ग] गिरदान की जड़ २ तोला
गोघृत २० तोला

गिरदान की जड़ को बारीक पीस लेना चाहिये और घीको गर्म कर उसमें मिला लेना चाहिये। ८ दिन तक पिलाना चाहिये इस के बाद,

[घ] चिरौंजी की जड़ २० तोला
दुग्ध ४० तोला

जड़ कूटना और दूध से धोकर निचोड़ लेना। इस तरह कई बार करना चाहिये। ६ दिन तक यह दवा पिलाना चाहिये। उस के बाद,

[ड] धामण की जड़ २० तोला
गोदुग्ध ४० तोला

चिरौंजी की जड़ की भांति। यह दवा ८ दिन तक पिलाना चाहिये। इस के बाद:—

[च] सियाल बेठानिया का चुर्ण ३ तोला
गाय घी २० तोला

चुर्ण को बारीक बांट लेना और घी में मिलाकर ८ दिन देना चाहिए।

इन दवाइयों में से कोई चीज न मिले तो कोई भी एक दवाई १ मासतक देते रहने से भी काम चलता है।

खान-पान

जानवर को पौष्टिक दाना देना चाहिए (अलसी, उड़द, गेंहू, चन सोयाबिन खसखस की खली आदि) १ मासतक देना।

बबूल की फली अवश्य खिलाना चाहिए।

बांधने का स्थान कच्चा हो।

हड्डी जोड़ते समय जोडने से पूर्व १० तोला शराब पिला देने से उसे दर्द मालूम नहीं होगा।

(८) तेल और शक्कर भी खिलाई जा सकती है।

(९) दूध ८० तोला (हो सके वहाँ तक भेड़ का दूध काम में लावें।
गुड़ २० तोला

गुड़ दूध में डालकर पिलाने से खून बढता है व हड्डी जुडने में मदत पहुँचाता है। दूध एक माहतक बराबर पिलाते रहना चाहिए।

गांगडी १ तोला
आम्बाहल्दी २ तोला
तेल अलसी २० तोला

मिलाकर पशुको करीब १० दिन तक पिलाया जाय

हड्डी टूट कर बाहर आ जाना
(कम्पौण्ड फ्रेक्चर)

कारण

ऊपर लिखानुसार

लक्षण

ऊपर लिखानुसार

इलाज

सर्व प्रथम अगर हड्डी बाहर निकल आई हो तो ठीक ढंग से हड्डी को अन्दर बिठा देना चाहिए। चमडे को चीरकर भी अन्दर बिठा सकते हैं तत्पश्चात् तिनछ की अन्तर छाल को खूब बारीक पीस कर कपड़े से छान लेना चाहिए। इस के बाद ऊपर लिखेनुसार पट्टी बांधना चाहिए और हर आठवें दिन पट्टी बदल देना चाहिए। अगर पीछे का पैर हो और जंघा पर से टूटा हो तो खपाचियां ३-३ इञ्च लम्बी लेना चाहिए। कपड़ा खपचियों से १ इञ्च लम्बा लेना चाहिए।

अगर पैर घुटने के ऊपरी हिस्से में से टूटा हो तो पूरे पैर के बराबर कपडा और खपाचियां लें। साथ ही पट्टी बांधने के पहिले टाट की दो लिपटी हुई १½ इञ्च गोलाई की पट्टियां टोच पर रक्खे।

इन पट्टियों को मोड़ पर या टोच पर दोनों तरफ समानान्तर रखना चाहिए।

इस के बाद पास ही खपाचियां बांधना चाहिए। पट्टी को ५ जगह से बांधना चाहिए। सनकी रस्सी से। खपाचियां लचने वाली होना चाहिए तथा उनके ऊपर भी कपडा लपेट लेना चाहिए।

पिलाने की दवाइयां

ऊपर लिखी सब दवाइयां उपयोग में लाना चाहिए।

खान पान

प्रतिदिन दुग्ध १ सेर और गुड़ २० तोला मिलाकर पिलाना।

अलसी का तेल २० तोला और शक्कर २० तोला मिलाकर पिलाना।

बबूल की हरी पत्तियां या अगर फलियां मिल सके तो फलियां जानवर को अवश्य खिलाना।

दाने के लिए उडद, सोयाबीन, चने की दाल, गवार, तिल्ली की ताजा खली और खसखस की खली उपयोग में लाना।

हड्डी का जोड़ से सरकना तथा मोच आना

कारण

जानवरों को अत्यधिक जोर से दौड़ाना। कीचड़-युक्त भूमि पर पैर फिसल जाना। जानवरों का आपस में लड़ना। इसके अलावा कभी कभी डामर की सड़कों पर भी जानवर का पैर फिसल जाता है और हड्डी सरक जाती है।

लक्षण

जिस स्थान से हड्डी उतर जाती है वहाँ जोर का दर्द होता है और उस स्थान पर सूजन आ जाती है। उतरा हुआ हिस्सा दूसरे हिस्से से चढ़ा हुआ और टेढ़ा दिखाई देता है। जानवर लंगड़ता है।

इलाज

जिस जानवर की हड्डी उतर जाय उसको प्रथम जमीन पर लिटा दो। उतरा हुआ पैर ऊपर रहना चाहिए। हड्डी उतरे पैर को छोड़ शेष तीनों पैरों को बांध दो।

अब अगर फरें (जांघ) की हड्डी उतरी हो तो जानवर के खुर के पास पहुंचे में रस्सी बांधकर, उस रस्सी में दो हाथ की दूरी पर एक डण्डा बांध डण्डे को पकड़ लो। डण्डे को २ आदमी पकड़ें और खींचते रहें। फिर उसी पैर के नीचे जांघ के पास एक मूसल जिसके बीच में थोड़ा कपड़ा बँधा हो—रखकर जानवर की पीठ की ओर खड़ा होकर दोनों हाथों से मूसल—(गोल लकड़ी अच्छी मोटी हो) को पकड़ एकदम झटका देना। झटका देते ही उतरी हुई हड्डी "खट" से आवाज करके यथास्थान आ जायगी। जब तक ऐसी आवाज़ न हो जाय; दो चार झटके देना चाहिए। हड्डी यथास्थान आ जाय तब जानवर को खड़ा कर दो।

यदि हड्डी को उतरे अधिक दिन हो गए हों तो प्रथम उस स्थान पर मुजाल या बकाण का नमक मिश्रित गर्म पानी छिड़कना चाहिए और पश्चात् हड्डी को ऊपर लिखानुसार बिठाना चाहिए।

इतने पर भी अगर हड्डी यथाऽस्थान न बैठे तो अन्तिम इलाज दाग लगाने का है।

दाग लगाने से पूर्व एक बार नीचे लिखा प्रयोग अवश्य कर लेना चाहिए और इसके बाद भी अगर आराम न हो तो फिर दाग लगाना चाहिए।

प्रयोग

जिस जगह दाग लगाना हो वहाँ निशान बना लेना। तत्पश्चात् आक का दुग्ध, तिल्ली का तेल और सिन्दूर समान भाग मिला लेना चाहिए। इस मिश्रण को लकड़ी या फाए से निशानों पर लगाना चाहिए। यह मिश्रण दाग का कार्य करेगा। यह मिश्रण लगाने के १५ दिन पश्चात् उस स्थान पर खोपरे का तेल लगा देना चाहिए। इस से घाव ठीक हो जायगा।

दागना

१. जांघ की हड्डी उतर जाने पर पिछले पैर के कूल्हे पर अंग्रेजी भाषा का आठ का अङ्क बनाकर मध्य में दो आड़ी लाइनें बना देना चाहिए। अंग्रेजी आठ का अङ्क १ फीट लम्बा और ६ इन्च चौड़ा बनाना चाहिए।

इस प्रकार निशान बनाकर गर्म लोहे या दांतली से दाग देना चाहिए। ऊपर लिखे प्रयोग में भी इसी प्रकार निशान बनाना चाहिए। दाग लगाने के बाद दागों पर खोपरे का तेल लगाना चाहिए और बाद में एक बार पुनः गर्म लोहा निशानों पर फेर देना चाहिए। इस से दाग अच्छे लगेंगे।

२. अगले पैर का फर्रा खिसकने पर उलटा खजूरा — इस प्रकार का निशान पशु की खदौल के २ इन्च नीचे से नक्खी तक डेढ़ फीट खड़ी लाईन खींचकर ६-६ इन्च की आमने-सामने लाइनें खींचना और उनपर दाग लगा देना।

३. अगले पैरों की नक्खी उतर जाने पर प्रथम नीम की हरी सलाइयां लाकर उनके पत्ते तोड़ देना और उनपर होनेवाला बारीक छिलका उतार देना। तत्पश्चात् जानवर का मुँह चौड़ा करना और उसके नाक के स्वरों में पूरी सलाइयां भर देना। सलाइयों को निकालना नहीं चाहिए। इस प्रयोग से ८-१० दिन में नक्खी अवश्य बैठ जायगी। यदि न बैठे तो दाग नक्खी पर लगाना चाहिए। इस वृत्त की लम्बाई चौड़ाई ६ इन्च की होना चाहिए। इस से भी आराम न हो तो फिर उसी दाग पर दाग लगा देना चाहिए।

झटका लगना

कारण

हल, गाड़ी एवं वज़न खींचने वाले जानवरों के अक्सर झटका लग जाता है। साधारणतया बैलों को झटका अधिक लगता है।

लक्षण

झटका लगते ही जानवर का कोया बाहर निकल आता है। आँख में से आँसू गिरने लगते हैं। अत्यधिक जोर का झटका लगने पर जानवर की रीढ़ की हड्डी पर असर होता है। रीढ़ की हड्डी पर असर होने पर अगर रीढ़ पर हाथ रक्खा जाय तो जानवर झुक जाता है। झटके का सबसे ज्यादा असर गर्दन पर होता है। गर्दन अकड़ जाती है। गर्दन पर वज़न रखते ही जानवर बैठ जाता है।

झटका लगने के बाद अगर बहुत जल्दी ही इलाज नहीं कराया जाय तो जानवर धीरे धीरे बहुत ही कमजोर हो जाता है।

इलाज

(१) नमक १ तोला
बासीपानी ८०

दोनों को मिलाकर कुनकुना गर्म कर लेना चाहिए और जानवर की आँख पर दिनमें २ बार ७-८ दिन तक छींटना चाहिए। पानी को गर्म कर छान लेना चाहिए।

(२) दागना:— अगर इससे भी आराम न हो तो फिर दाग लगाना चाहिए। दाग कोया निकली हुई आँख के भौंहे के ऊपरी भाग में २ इञ्च लम्बा  इस तरह का गोल दाग लगाना चाहिए।

रीढ़ की हड्डी पर असर होने पर:—

(१) गौ दुग्ध ८० तोला
सैंधा नमक बारीक १५ तोला

दोनों को मिलाकर शीघ्र प्रातःकाल जानवर को पिला देना चाहिए।

(२) मेथी ४० तोला
छाछ १२० तोला

दोनों को मिलाकर दिनमें १ बार १५ दिन तक जानवर को पिलाना चाहिए। गर्दन के असर पर विशेष लाभकारी है।

(३) फिटकरी ५ तोला
काला नमक ५ तोला
सज्जी १३ तोला
आम्बा हल्दी ५ तोला
ढांढण के बीज ५ तोला
पानी १२० तोला

सबको महीन पीस कर पानी या पानी के बजाय छाछ में मिलाकर जानवर को पिला देना चाहिए। यह दवाई सुबह-शाम दोनों समय पिलानी चाहिए।

(४) दागना:— आराम नहीं होने पर बैल की पीठ पर पानी की कोख से घास की कोख तक दो आड़े दाग करीब १-१ फुट लम्बे लगा देना चाहिए।

खान-पान

बीमार जानवर को दवाई देने के बाद ५ घण्टे तक चारा-दाना और पानी नहीं देना चाहिए। जानवर को हल्की, पतली और पोषक खुराक देना चाहिए। मुलायम घास खाने को दें। स्वच्छ जल कुएँ का पिलाना चाहिए।

पसली टूट जाना

कारण

कभी कभी जानवरों के परस्पर लड़ने से एवं पसलियों पर अचानक घातक चोट लग जाने से उनकी पसली टूट जाती है। अगर पसली टूट जाय तो निम्न लिखित इलाज करना चाहिए:—

इलाज

(१) नीम की पत्तियाँ
नमक
पानी

आवश्यकतानुसार मिलाकर उबालना चाहिए और सेक करना चाहिए।

(२) मुनावल की पत्तियाँ
नीम की पत्तियाँ
निर्गुण्डी की पत्तियाँ
नमक
पानी

सबको मिलाकर उबालना चाहिए और सेक करना चाहिए।

(३) तिनछ की छाल का चूर्ण
गौमूत्र

दोनों को मिलाकर टूटे स्थान पर पट्टी बांधना चाहिए।

(४) सूरजमुखी के बीज
नमक
पानी

बारीक पीसकर सबको मिला लेना चाहिए और पट्टी बांधना चाहिए।

(५) जहाँ से पसली टूट गई हो उसपर ⊕ इस प्रकार का दाग लगा देना चाहिए।

कमर का टूट जाना

जानवर अक्सर अचानक गिर पड़ते हैं और उनकी कमर पर भारी आघात पहुँचता है। इस प्रकार कभी कभी कमर टूट भी जाती है।

इलाज

सर्व प्रथम जानवर को किसी के सहारे रस्सियों का और टाट का सहारा देकर खड़ा रखना चाहिए।

पिलाने के लिए नीचे लिखी औषधियाँ देना चाहिए।

(१) दही १२० तोला
मसूर की जली हुई दाल ४० तोला

मिलाकर जानवर को पिलाना चाहिए। यह दवा करीब ५ दिन तक पिलाना चाहिए।

(२) दही १२० तोला
गुड़ ४० तोला

दोनों को मिलाकर जानवर को पिलाना चाहिए।

(३) गौ दुग्ध ८० तोला
गुड़ ४० ,,

मिलाकर पिला दें।

(४) चापड़ी की जड़ ४० तोला
गौ दुग्ध ८० ,,

मिलाकर पिला दें।

(५) बामण की जड़ ४० तोला
गौ दुग्ध ८० ,,
गुड़ ४० ,,

मिलाकर पिला दें।

खुर-मोच या खुर चड़क

कभी कभी जानवरों का खुर चड़क जाता है या खुर में मोच आ जाती है।

इलाज

१. ढाकणी के इलाज में लिखेनुसार चने बांधना।

२. दाग लगाना।

३. मोच पर तिनछ की अन्तर छाल का चूर्ण बांधना और ऊपर गौमूत्र डालना।

आगे के पैर की ढाकणी खिसक जाना

परस्पर लड़ने, घातक चोट लगने, दौड़ने एवं फिसल जाने से कभी कभी ढाकणी खिसक जाती है। नीचे लिखे उपाय उपयोग में लाना चाहिए।

इलाज

१. ढाकणी पर किसी अच्छे मजबूत कपड़े में सूखे चने बांधना चाहिए और चनों पर दिन में खूब पानी छींटना चाहिए। चने फूलेंगे और ढाकणी यथास्थान आ जायगी। चनों को खूब मजबूत बांधना चाहिए।

२. दागना:—इसके अलावा अगर चनों का प्रयोग करने पर भी ढाकणी यथास्थान न आए तो तत्पश्चात् दाग लगाना चाहिए।

सींग टूट जाना

इलाज

१. बेल फल का गूदा
सिन्दूर
तेल अलसी

तीनों को मिलाकर सींग में भर दें। तत्पश्चात् ऊपर आदमी के बाल रखकर पट्टी बांध दें।

२. सिमेण्ट

पानी आवश्यकतानुसार लेकर मिला लेना चाहिए और सींग में भर देना चाहिए।

३. बबूल का गोंद

सिन्दूर

तेल अलसी

तीनों को मिलाकर सींग में भर दें।

४. तिनछ की अन्तर छाल का बारीक चूर्ण भरना चाहिए।

कमेड़ी (कैंसर)

कारण

अक्सर कभी कभी जानवर के सींग में छेद हो जाता है और छेद हो जाने के पश्चात् सींग में धीरे धीरे पानी उतरता रहता है। इस तरह पानी उतरता रहता है और सींग के अन्दर सड़ान उत्पन्न होती रहती है। इलाज नहीं करने पर कुछ समय बाद सड़ान भयङ्कर रूप धारण कर लेती है और सींग में कैंसर रोग उत्पन्न हो जाता है। कई लोग सींग में कैंसर-रोग होने का कारण एक प्रकार का कीड़ा मानते हैं जो कि अन्दर चला जाता है और कैंसर पैदा हो जाता है।

लक्षण

सींग में सड़ान उत्पन्न हो जाती है।

सींग को दबाने पर कुछ कुछ ढीला मालूम पड़ता है।

अगर रातको सींगों को पकड़कर रक्खा जाय तो जिस सींग में सड़ान पैदा हुई होगी यानी कैंसर उत्पन्न हुआ होगा वह गर्म मालूम पड़ेगा। जानवर अपना सिर ठोकता है।

जिस सींग में कैंसर पैदा हो जाता है वह नीचे से मोटा बनता जाता है और धीरे धीरे झुकता जाता है। पक्की पहिचान के लिए दोनों सींगों की नोकों पर से दोनों सींगों के मध्य की दूरी डोर से नाप लेना चाहिए और नापने के बाद ८ दिन पश्चात् पुनः नापना चाहिए। अगर कैंसर होगा तो मध्य की दूरी बढ़ जायगी। कैंसर ३ दर्जों में अपना पूरा रूप धारण करता है। अन्तिम रूप धारण कर लेने पर इलाज हो सकना असंभव है। इलाज भी दर्जों के अनुसार ही करना चाहिए।

पहला दर्जा

१. सर्व प्रथम अगर रोग लगा ही हो तो सींग को काटकर उसमें का पानी निकाल देना चाहिए और अन्दर तीसरे दिन १ रत्ती सोमल भर देना चाहिए।

२. खरगोश की लैंडी आधी या ½ तोला आटे में मिलाकर जानवर को खिलाना चाहिए।

३. दागना:—अगर दाएँ सींग में रोग हो तो बाएँ पुट्ठे पर अँग्रेजी के आठ 8 के समान दाग लगाना चाहिए।

रोग बाएँ सींग में हो तो इसी प्रकार दाएँ पुट्ठे पर दाग लगाना चाहिए।

दूसरा दर्जा

(१) सींग को जड़ से १ इन्च ऊपर से काट कर फेंक दें और नीम की पत्ती के उबले पानी से धोना चाहिए। अगर अधिक खून

निकले तो दरांती से दाग लगा देना चाहिए। तत्पश्चात् ऊपर रूई रखकर पट्टी बांध देना चाहिए। इस के बाद पट्टी को तीसरे दिन खोलना चाहिए और नीम के पानी से खूब धोना चाहिए। धोकर सोमल १ रत्ती उस में भर देना चाहिए। क्रमशः इसी तरह कुछ दिन करना चाहिए।

तीसरा दर्जा

इस दर्जे में कान एवं आँख पर सूजन आ जाती है। अगर अन्दर से पीप निकलती हो तो प्रतिदिन नियमित धोना चाहिए और धोकर २ रत्ती सोमल अन्दर भरना चाहिए और ऊपर भूरीरीगणी का डाट लगा देना चाहिए। डाट लगाकर पट्टी बांध देना चाहिए। पट्टी पर खोपरे का तेल और डीकामाली लगा देना चाहिए।

मोर के पंख जले हुए और खोपरे का तेल भी मिलाकर लगा सकते हैं। इस से जख्म पर मक्खी नहीं बैठेगी और कीड़े नहीं पड़ सकेंगे!

कठाभी (ट्यूमर)

कारण

यह रोग अक्सर वर्षा एवं सर्द ऋतु में होता है। जो जानवर रात-दिन खुली जगह में ही रहता है उसको भी यह रोग हो जाता है। साधारण तथा रक्त विकार के कारण यह रोग उत्पन्न होता है।

लक्षण

यह रोग गले या कण्ठ पर होता है।

कंठ या गले पर जहर बात से मिलती जुलती एक गाँठ पैदा होती है। गांठ प्रथम बहुत छोटी होती है और धीरे धीरे बहुत बढ़ जाती है। गांठ गोल और लम्बाई में अधिक होती है। यदि जानवर को यह रोग

हो जाय और समय पर इलाज न हो सकने के कारण गांठ पक जाय तो तत्पश्चात् जीवन भर यह रोग जानवर को सताता रहता है। गांठ पकती है और फूटती रहती है। क्रमशः यही क्रम चलता रहता है।

इलाज

(१) नीम के पत्तों से सेकना। नीम के पत्ते और थोडा नमक मिलाकर उबाल लेना और कुन-कुने पानी से गांठ पर सेक करना चाहिए।

(२) ईंट को गर्म करना चाहिए और उससे गांठको सेकना चाहिए। ईंट से सेक करने के बाद नीचे लिखा लेप गांठ पर लगाना चाहिए।

लेपः—

आम्बाहल्दी
फिटकरी
काला नमक
नई कन्द
खोपरे का तेल
सबको बारीक पीस गर्म कर लें और गांट पर लेप करें।

(३) अगर इस के लेप से भी गांठ ठीक न हो तो लोहे का एक सूया गर्म करके गांट में घुसेड़ देना चाहिये। गांट में घुसेड़ने से अन्दर की विषैली वायु बाहर निकल जायगी और गांट ठीक हो जायगी।

(४) इतने पर भी रोग ठीक न हो तो × इस तरह का गांठ पर दाग लगाना चाहिए।

आँख का फूला

आंख में बाहरी कोई वस्तु चली जाने एवं चोट लग जाने से जानवरों की आंखों में फूला बन जाता है। फूला बन जाने पर आंख से

दिखाई नहीं देता है और आंख बिल्कुल खराब हो जाती है। आंख में फूला बनते ही उसका इलाज तुरन्त करना चाहिए, वरना बाद में इलाज हो सकना असम्भव है।

इलाज

(१) फूला बनते ही जानवर के आंख की कनपटी पर चाकू से खरोंचकर वहां के बाल उखाड़ देना चाहिए और तत्पश्चात् उस जगह ३—४ दिन तक लगातार चम्पाथ्वर का दुग्ध लगाना चाहिए। आँख के अन्दर उबला हुआ नमक और तम्बाखू मिश्रित पानी, छान कर डालना चाहिए।

(२) लाल मिर्च को खूब बारीक पीस कर घी के साथ आंख में आंजना चाहिए।

जानवर को तकलीफ तो होगी परन्तु आराम अवश्य हो जायगा।

(३) साम्भर सींग पानी में घिसा हुआ

निम्बू का रस

मक्खन

कीमिया सिन्दूर

इनको मिलाकर आंख में आंजना चाहिए।

(४) गुराड़ की जड़ को पानी में घिस कर आंख में आंजना चाहिए।

(५) दागनाः—

इस में दाग तीन प्रकार के लगाये जाते हैं :—

प्रथमः—सिर पर जहां गड्ढा होता है वहां चोची पर आड़ा दाग लगाना चाहिए। दाग ४ इन्च लम्बा लगाना चाहिए।

द्वितीयः—आंख के भौंहों के ऊपर ⌒ इस प्रकार का दाग लगाना चाहिए।

तृतीयः—तीसरा दाग पूरी आंख के चारों ओर लगता। दाग इस प्रकार लगाना चाहिए।

इन में से कोई भी एक दाग लगाना चाहिए।

इस के अलावा आंख के भौंहों पर केवल तीन जगह छोटे छोटे दाग लगा देने से भी काम चल सकता है।

आँख में जाला

जाला एक प्रकार के कीड़े के कारण आँख में पैदा होता है। जाला बनते ही बहुत जल्दी इलाज करना चाहिए।

इलाज

(१) काला नमक और पानी को उबालना चाहिए और छानकर कुनकुना आँख पर छींटना चाहिए।

(२) नीम के पत्ते, पानी और नमक को उबालना और छानकर आँख पर छिड़कना चाहिए।

(३) तम्बाखू, चूना और पानी मिलाकर उबालकर सड़ाना तत्पश्चात् छानकर आँख पर छींटना चाहिए।

(४) दही और अफीम मिलाकर आँख में आँजना चाहिए।

(५) असगन्ध को पानी में घिसकर आँख में आँज दें।

(६) नईकन्द को पानी में घिसकर आँख में आँज दें।

(७) असगन्ध और नईकन्द को निम्बू के रस में घिसकर आँजने से भी फायदा होता है।

रक्त-प्रदर

जानवर को ब्याने के पश्चात् चारा-दाना देने में गड़बड़ी होने से यह रोग कभी कभी लग जाता है। साधारणतः जनने के बाद अत्यधिक गर्म वस्तुएँ जानवरों को खिलाने से भी यह रोग हो सकता है।

इलाज

(१) दही ४० तोला
घृतकुमारी का गूदा ४० ,,

दोनों को मिलाकर दोनों समय जानवर को दें।

(२) सींग मरमर के पत्ते १६० तोला
पानी २० सेर

पत्तों को बारीक पीस लें। पश्चात् खूब उबालना चाहिए। कुछ पानी जानवर को पिलाना चाहिए और शेष पानी से जानवर को स्नान कराना चाहिए।

खान-पान

जानवर को चारा-दाना में हलकी, पतली और पोषक एवं ठण्डी वस्तु खाने को दें।

सूर की बीमारी

यह रोग भैंस वर्ग में ही होता है। गर्मी की अधिकता के कारण यह रोग उत्पन्न होता है। भैंस व भैंस के बच्चों को ठीक समय पर पानी नहीं मिलने से यह बीमारी होती है। कभी कभी अत्यधिक गर्म पानी पीने से यह रोग हो जाता है।

लक्षण

मुँह के अन्दर के दोनों स्वर—जिनका सम्बन्ध नाक के दोनों नथुनों से एवं मस्तिष्क से होता है—अन्दर से चौड़े हो जाते हैं। पानी नहीं पिया जाता। पानी पीने पर नाक से गिरता है।

इलाज

(१) सिन्दूर
मक्खन
रुई (बहुत कम मात्रा में) तीनों को मिला लें।

पश्चात् गौतमी घास की काड़ी लेकर उपर्युक्त मिश्रण उसके सिर पर लगा लें। इसके बाद जानवर को जमीन पर लिटा लेना चाहिए और सावधानी से दोनों स्वरों में दो काड़ियें आधा इञ्च अन्दर जाने देकर तोड़ लें। अवश्य आराम होगा। यह क्रिया कुछ दिन निरन्तर करना चाहिए।

खान-पान

जानवर को कमजोर न होने देना चाहिए।
मुलायम हरी घास खाने को दें।

डँडकी रोग

केवल गाय बैलों को ही यह रोग होता है। ठण्ड और गर्म काल में ही यह रोग उत्पन्न होता है।

जिह्वा के ऊपर कण्ठ में जो कौए लटके रहते हैं, उस से बाहर ही जिह्वा पर सूखा या कटेला घास खाने के कारण यह रोग उत्पन्न होता है।

लक्षण

जिह्वा पर एक घाव हो जाता है।
घाव में से नापसन्द दुर्गन्ध आती है।

इलाज

१. प्रथम घाव को साफ कर नीम के पानी से धो दें।

२. इसके बाद उसमें नमक भरें। तीन दिन पश्चात् घाव को साफ कर उसमें मिस्सी भर दें।

३. मिस्सी न मिल सके तो तवाखार (तवकी) घी में मिलाकर प्रतिदिन भरना चाहिए।

४. अन्तिम इलाज दागने का है। दाग बहुत मामूली लगाना चाहिए। सूजे हुए एवं उठे भाग को लोहा गर्म करके बहुत मामूली दागना चाहिए।

इल रोग

यह बीमारी ठण्ड काल में होती है। जानवर घास के साथ एक प्रकार का कीड़ा खा जाता है और यह रोग पैदा हो जाता है।

लक्षण

जिव्हा के नीचे के भाग में चट्टे पड़ जाते हैं। चट्टे उत्पन्न होने के बाद अन्दर सड़ान पैदा होती है और सड़ान पैदा होते ही उसमें छोटे छोटे कई कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार निश्चित समय पर इलाज नहीं होने पर रोग बढ़ता ही जाता है।

इलाज

१. फिटकरी	५ तोला
मिस्सी	५ तोला
हल्दी	५ तोला
मकान की झाड़न का धूसा	५ तोला

चारों को बारीक पीसकर एक शीशी में भर लें। दिन में ३ बार इस मिश्रण को घाव पर भरना चाहिए।

२. सिर के बाल	½ तोला
गुड़	१ तोला

दोनों को मिला कर कूटकर एक टिकिया बना लें। जिव्हा को उलटकर टिकिया घाव में रख देना चाहिए। बाद में बन्दूक के गज के सरी को गर्म करना चाहिए और उसको टिकिया पर लाल लाल रखना चाहिए। इससे गर्मी से अन्दर के कीड़े मर जावेंगे।

पटाड़ी रोग

गर्मी के दिनों में यह रोग होता है। अधिक गर्म वस्तुएं खा जाने से अक्सर यह रोग ज्यादा होता है।

लक्षण

पतले दस्त लगते हैं। मल बहुत ही दुर्गन्धयुक्त होता है। मल में से नापसन्द दुर्गन्ध आती है। मल में चिकनाई नहीं होती। मल के साथ कभी कभी रक्त भी आता है। अन्त में आँतें गिरने लगती है।

इलाज

१. अरणी की हरी पत्तियाँ ३० तोला
ठण्डा पानी ६० तोला

पत्तों को पीस लें और जानवर को पानी में मिलाकर पिला दें।

२. नीम की पत्तियां ३० तोला

पत्तियों को पीसकर जानवर को पिला दें और बाद में ३० तोला घी पिला दें।

३. खजूर की जड़ का रस ५ तोला
शतावरी की हरी जड़ ५ तोला
पानी २० तोला

बारीक पीस पानी में मिला कर पिला दें।

४. भंग २ तोला
सौंफ ५ तोला
कपूर ½ तोला
बेल फल का गूदा ५ तोला
पानी २० तोला

बारीक पीस पानी में मिलाकर पिला दें।

५. शीशम की पत्तियां
पानी

बारीक पीस पानी में मिला पिला दें।

६. छाछ बघारा और
जली ज्वार छाछ के साथ जानवर को पिलावें।

७. भंग और दही मिलाकर पिलावें।

८. कढ़ी का गोंद
बेल फल गूदा
पानी
बारीक पीस छानकर जानवर को पिला दें।

९. एर की जड़
हाथी का लेण्डा
मसूर की जली दाल
सब को बारीक पीस छाछ के साथ पिलावें।

खान-पान

जानवर को हलकी पतली और पोषक खुराक दें।

कन्धे में गांठ होना

बैलों के कन्धे में अक्सर जोतने में गलती करने के कारण गांठ उत्पन्न हो जाया करती है। गांठ हो जाय तो निम्न लिखित उपाय काम में लाना चाहिए।

(१) गांठ को ईंट से सेकना चाहिए।

(२) सींग दराद और आम चूल का तेल मिलाकर लगाना चाहिए

(३) आक का दूध और अलसी का तेल मिलाकर लगावें।

(४) आगिया पौधा और दुग्ध मिलाकर पिलावें।

(५) आक की जड़ पीस कर आटे के साथ खिलावें।

(६) ओची पर—सिर पर गड्ढे के पास—चाकू से छील आक का दूध लगावें।

(७) अन्त में गांठ पर दाग लगाना चाहिए।

कन्धा तिड़कना

निम्न लिखित उपाय काम में लाये जाँय :—

(१) आमचूल का तेल और
सींग दराद मिलाकर लगाना चाहिए।

(२) स्नान करने का बढ़िया साबुन और नील मिलाकर लगाना चाहिए।

(३) मक्खन और नमक मिलाकर लगावें।

(४) रतन जोत का दूध लगावें।

(५) खोपरे का तेल लगावें।

(६) मिस्सी और तेल नीम का मिलाकर लगावें।

(७) अन्त में दाग लगाना चाहिए।

हाथी पगा

आंखों की सूजन

यह सूजन पूरे मुँह, कान और सिर पर फैल जाती है।

इलाज

प्रथम जानवर के कान आंखों के बराबर ले आकर मिला लेना चाहिए। तत्पश्चात् दोनों कानों के सिरों को काट कर निकलने वाला रक्त दोनों आंखों में आंजना चाहिए।

जानवर का अकड़ जाना

ठण्ड लगने के कारण एवं अन्य कारणों से कभी कभी जानवर अकड़ जाता है। उससे चला नहीं जाता है। अतः नीचे लिखे उपाय काम में लाना चाहिए।

इलाज

(१) गुराह के वृक्ष की छाल ३ सेर
पानी ५ सेर

काढ़ा बनाना चाहिए और जानवर को पिलाना चाहिए। तत्पश्चात् इसी छाल को २–४ बार इसी तरह उबालना चाहिए और जानवर को देना चाहिए।

स्तन-फटना

कभी अधिक ठण्ड पड़ती है और हवा भी बहुत तेज चलती है। ऐसी स्थिति में अक्सर जानवरों के स्तन फट जाया करते हैं। कभी कभी बच्चे भी काट देते हैं। एवं तार आदि के लगने पर भी कट सकते हैं।

इलाज

(१) कौड़ा ४ लेकर जला लें और १ तोला मक्खन में मिलाकर मलहम बनालें।

(२) असली शहद का मोम १ तोला लेकर १ तोला मक्खन में मिला लें और स्तनों पर लगावें।

स्तनों में फुन्सियां

इलाज

(१) हल्दी १ तोला
सेंधा नमक १ ,,
मक्खन २ ,,

बारीक पीसकर सबको मिला लें और लगावें।

कभी कभी जानवर के स्तनों में से खून निकलने लगता है। ऐसी हालत में नीचे लिखे उपाय काम में लाना चाहिए :—

(१) सुन्दर बेल को पीसकर जानवर को खिलाना चाहिए।

(२) नीम के पत्ते और नमक, पानी मिलाकर उबालना चाहिए और कुनकुने पानी से सेकना चाहिए।

(३) औंधी जूती पर दुग्ध धारा मारना चाहिए।

(४) पत्थर चट्टी की धूनी देना चाहिए।

हिया बिलाय

कारण

जानवर का अत्यधिक गर्म पदार्थ खाना। हृदय पर अकस्मात् चोट लग जाना। जानवर से अधिक परिश्रम लेना और एकदम पानी पिला देना। कभी कभी ऋतुपरिवर्तन के समय भी ऐसा होता है।

लक्षण

जानवर को साधारण ज्वर रहता है। श्वास की गति बढ़ जाती है और झटकेदार श्वास आता है। दस्तों के साथ मामूली खून भी कभी कभी आता है। जानवर छाया में खड़ा रहना पसन्द करता है। अधिक गर्मी में जानवर पानी में जाकर खड़ा रहता है। यह रोग फेफड़ों में पैदा होता है और फेफड़े सड़ जाते हैं। जानवर ये सब लक्षण दिन में प्रकट करता है।

इलाज

(१) बदक या मुर्गी का अण्डा १
गाय का दुग्ध ४० तोला

दोनों को मथकर पिला दें। अण्डे का छिलका फेंक दें।

(२) नीम की पत्ती १० तोला
गौ घृत ४० ,,

पत्तों को बारीक पीस लें और मिलाकर दें।

(३) दही ८० तोला

शक्कर २० ,,

मिलाकर जानवर को पिला दें।

(४) दही ८० तोला

प्याज का रस २० ,,

मिलाकर पिला दें।

नोटः— अण्डे के लिए जहाँतक बन सके बदक का अण्डा ही लेना चाहिए। बदक का अण्डा विशेष फायदा करता है।

खान-पान

जानवर को गर्म वस्तुएँ नहीं खिलाना चाहिए।

तिड़ रोग

जानवर के शरीर से रक्त-धारा निकलनाः— यह रोग गर्मी से पैदा होता है। इस रोग में शरीर के किसी भी भाग से अचानक रक्त-धारा बह निकलती है।

इलाज

(१) जानवर को ४० तोला गाय का घी प्रति तीसरे दिन सुबह पिलाना। इस तरह करीब २½ सेर घी पिला दें।

(२) कोष्टा ४

घी १० तोला

कोष्टों को बारीक बांट लेवें और घी में मिला आटे के साथ जानवर को दे दें। यह दवाई एक सप्ताह तक नियमित पिलावें।

(३) प्याज का रस १५ दिन तक पिलावें।

प्याज १ सेर लेकर उसका रस निकाल लें।

(४) रविवार के दिन कौओं को रोटी डालना और उनके मुँह से जो रोटी गिर जाय वह जानवर को खिलाना।

(५) तिड़ को पकड़ना—रक्त-धारा को—और आटे में मिला जानवर को खिला देना।

(६) अगर तिड़ में रहने वाले कीड़े को पकड़कर निकाला जा सके तो पकड़ कर निकालना चाहिए। कीड़ा अत्यन्त सूक्ष्म होता है। कीड़े का रंग श्वेत होता है। कई लोग इस रोग की उत्पत्ति का कारण एक प्रकार का कीड़ा बताते हैं। अतः पकड़ कर निकाला जा सके तो निकालना चाहिए।

(७) जहाँ से रक्त-धारा निकलती है उस स्थान को सण्डसी से मजबूत पकड़ कर वहाँ दाग लगाना चाहिए। दाग लगाने से कीड़ा मर जायगा।

दुग्ध पीते बच्चों को दस्त लगना

कारण

(१) अपचन

(२) दुग्ध पीकर पानी पी लेना।

(३) अचानक चोट लगना।

इलाज

(१) काली मिर्च १ तोला
गाय का घी ५ ,,

काली मिर्च को पीस लें और घी में मिलाकर दें।

(२) महावृक्ष की छाल ५ तोला
गाय का दुग्ध २० ,,

छाल को पीसकर दुग्ध में मिला लें और छान कर पिलावें।

(३) खाखर बेली का पूरा पौधा ३ तोला

छाछ ... ... २० ,,

बारीक पीस, छाछ में मिला; छानकर दें।

(४) छाछ बघारा ३ तोला

जली ज्वार २ ,,

छाछ २० ,,

बारीक पीस कर छाछ में मिला लें और पिला दें।

(५) जली ज्वार ३ तोला

छाछ २० ,, मिलाकर दें।

(६) बच्चों की पूँछ पकड़ कर खींचना।

(७) बच्चों को सादड़ के पत्ते खिलाना चाहिए।

(८) भैंस के बच्चों के नाभि के पीछे के भाग में ३ इञ्च लम्बा-आड़ा दाग लगावें।

गाय के बछड़े-बछड़ियों के बछड़ी के योनि के नीचे और बछड़े के गुदा के नीचे दो इञ्च लम्बा दाग लगावें।

फाँसी या छड़ रोग

कारण

यह रोग भैंस वर्ग के जानवरों में ही अधिक होता है। साधारणतः अन्य प्रकार के जानवरों को यह रोग होता नहीं देखा गया है। पशुओं को ठीक समय पर पानी नहीं मिलने के कारण ही यह रोग होता है।

लक्षण

जिह्वा के नीचे के हिस्से की नसों में काला रक्त भर जाता है। जानवर का शरीर अकड़ जाता है। खाना-पीना, जुगाली करना बन्द हो

जाता है। कमर के ऊपर दबाने से जानवर एकदम नीचे झुक जाता है। कान बिल्कुल ठण्डे पड़ जाते हैं। अक्सर दुधारू भैंसों को यह रोग विशेष होता है।

इलाज

(अ) प्रथम भैंस को जमीन पर लिटा देना चाहिए। तत्पश्चात् उसकी जिह्वा बाहर निकालना और बड़ी दो नसों को जिनमें कि छोटी छोटी नसें मिली रहती हैं—सुई से तोड़कर उनमें का काला रक्त निकाल दें। सुई से नस को तोड़कर दबाना चाहिए, काला रक्त निकल जायगा। इसके बाद जिह्वा पर नमक और हल्दी मिलाकर लगा देना चाहिए।

(ब) पूँछ के नीचे के भाग में थोड़ासा चीरा लगा देना और चीरा लगाकर पूँछ को खूब स्पञ्ज करना—यानी दबाना। इस प्रकार दबाकर सब काला रक्त निकाल दें। काला खून निकल जाने के बाद चीरे हुए भाग पर अफीम लगा दें।

आँख का कोया निकलना

कारण

१. बजन खींचते समय झटका लगना।

२. जानवरों का आपस में लड़ना।

३. जानवर का ऊँचाई से गिर जाना।

लक्षण

१. आँख का कोया बाहर आ जाना।

इलाज

१. बासी पानी और
नमक दोनों को गर्म करना और कुनकुना आँख पर छींटना।

२. आँख के भौहों पर दाग लगाना चाहिए।

पागल कुत्ते या सियार का काट खाना

लक्षण

पागल सियार या कुत्ते के काट खाने पर जानवर को जहर चढ़ता है। जानवर ३ दिन, ११ दिन, १½ मास या १½ वर्ष के बाद पागल होता है। अक्सर जानवर ३ दिन बाद पागल हो जाता है और १०-११ दिन में ही मर जाता है। पागल होने के बाद जानवर कुत्ते की भाँति चिल्लाने लगता है।

इलाज

१. काटे स्थान पर तत्काल गर्म लोहे का दाग लगाना चाहिए।
२. जंगली हजारे के १ फूल को पीसकर पानी के साथ दें। अगर हजारा हरा हो तो उसका रस दें।

जानवर को रतौंध आना

आँखों की कमजोरी के कारण जानवरों को रतौंध आती है।

इलाज

१. जानवर को खूब रिजका घास खिलाना चाहिए।

२.	दाढ़ण के बीज	१० तोला
	पुवाड़िया के बीज	१० तोला
	मेथी के बीज	१० तोला
	सेंधा नमक	५ तोला

इनको पानी में पकाकर जानवर को दें। पहले सब वस्तुओं को बारीक पीस लें।

खान-पान

जानवर को खूब पौष्टिक चारा-दाना दें।

पूँछ का बांडी रोग

रक्तमिश्रण में बाधा उपस्थित होने से यह रोग होता है। एक विशेष प्रकार के कीड़े के लग जाने का भी एक कारण है।

इलाज

नल के समान पोले गोल लोहे से जानवर के चांद पर दाग लगाना चाहिए।

२. पूँछ को ऊपर से रस्सी से बांध देना और बाद में रोग ग्रस्त स्थान को काट देना। तत्पश्चात् अफीम और तेल को गर्म करें और पूंछ को उसमें दाबकर सेक करें।

३. बकरी को पकड़ लेनेवाले भेड़िए का लैण्डा गर्म तेल में डालना और मलहम बना लेना और इस मलहम को पूँछ पर बांधना।

४. खोपरे का तेल और डीकामाली को गर्म कर कटे स्थान पर सेक करना चाहिए।

कमजोर सांड़ को बलवान बनाना

नीचे लिखी दवाइयाँ देना चाहिए:—

१. खाने का कत्था ५ तोला
घी १५ तोला
मिलाकर इसी मात्रा में १ मास तक देना चाहिए।

२. तिल्ली का तेल २० तोला
शक्कर २० तोला
दोनों को मिलाकर इसी मात्रा में १ मास तक दें।

३. चने की दाल २½ सेर
गाय का दूध २ सेर
गुड़ ½ सेर
दाल को दूध में भिगोकर गुड़ मिलाकर दें। १ मास तक दें।

गर्म पानी से जल जाना

नीचे लिखे उपाय काम में लावें :—

१. गेरू ५ तोला
खोपरे का तेल १० तोला
दोनों को मिलाकर जले स्थान पर लगाना चाहिए।

२. ऊंधाफूली की राख मक्खन में मिलाकर लगावें।

३. चूने का पानी
अलसी का तेल या मूंगफली का तेल मिलाकर लगावें।

आग से जल जाना

१. अलसी का तेल
चूने का पानी
राळ तीनों को मथकर लगावें।

२. गन्ने का रस लगावें।

३. ऊंधाफूली की राख या चूर्ण अलसी के तेल में मिलाकर लगावें।

४. डीकामाली और खोपरे का तेल लगावें।

जानवर के नजर लग जाना

अच्छे तन्दुरुस्त एवं खूबसूरत जानवरों के ही अक्सर नजर लगती है। अधिक दुग्ध देने वाली गायें, उनके बच्चे एवं सुन्दर बछड़े इसके अधिक शिकार होते हैं।

लक्षण

जानवर चिन्तित रहता है। कान ढीले पड़ जाते हैं। बच्चे दूध पानी छोड़ देते हैं। दूध देने वाले जानवर दूध नहीं देते हैं।

इलाज

(१) जानवर को सुन्दर तेल १० तोला रोटी के साथ सुबह-शाम दें।

(२) बहेड़ा के १५ फल नीले धागे में जानवर के गले में बांधें।

(३) पत्थर चट्टा और तेल मिलाकर धूनी दें

माता का अपने बच्चे को भूल जाना

कभी कभी गाय जनने के बाद अपने बच्चे को भूल जाती है और उसको दूध पिलाना एवं उसको देखना, प्रेम करना छोड़ देती है।

इलाज

(१) मोर के अण्डों का ऊपरी छिलका १ रत्ती जानवर को रोटी के साथ देवें। इस तरह करीब ५-१० दिन दें।

(२) दही और नमक मिलाकर बच्चे के शरीर पर लपेट दें और उसको मादा के सम्मुख रक्खें। मादा बच्चे को चाटने लगेगी और प्रेम करने लग जायगी।

(३) नमक और हल्दी दो-दो तोला लेना और इनको बारीक पीस बारीक कपड़े के टुकड़े में बांध लेना। इस पोटली को ५-६ हाथ लम्बी बारीक मुलायम डोर से बांध देना चाहिए।

तत्पश्चात् हाथ के नाखून काट लेना, हाथ को चिकना कर लेना, और हाथ को योनि मार्ग से अन्दर डालना चाहिए। अन्दर पोटली को खूब फिराना चाहिए। कुछ समय बाद पोटली को निकाल लेना और निकाल-कर पोटली और हाथ को एकदम बच्चे के शरीर पर पोंछ देना। बच्चे को मादा के मुँह के सम्मुख कर देना चाहिए। यह कार्य बहुत सावधानी और होशियारी से करना चाहिए।

पोटली के डोरी इसलिए बांधते हैं कि अगर पोटली अन्दर हाथ से छूट जाय तो आसानी से निकाल सकें।

सांप का काट खाना

सांप के काटने पर जानवर के शरीर पर विष के कारण सूजन आ जाती है। सूजन मुँह की ओर से शुरू होती है और सारे शरीर पर फैल जाती है। इस के बाद शरीर पर जगह जगह चट्टे पड़ जाते हैं। चमड़ी जगह जगह से फट जाती है। जानवर का रक्त पानी जैसा बनकर बाहर निकलने लगता है।

इलाज

(१) काटे हुए स्थान पर तत्काल दाग लगा दें।

(२) शिवलिङ्गी सूखी ८० तोला हरी १६० तोला

पानी २० सेर

शिवलिंगी को बारीक पीस कर पानी में मिला दें और थोड़ा पानी जानवर को पिलावें और शेष पानी से जानवर को स्नान करावें। जानवर को पिलाने के लिए शिवलिंगी का गाढ़ा घोल बनाना चाहिए।

(३) गूलर की छाल २० तोला

छाछ १ सेर

बारीक पीस छाछ में मिलालें और पिला दें।

कभी कभी जानवर को एक दूसरी किस्म का छोटा सांप काट खाता है। *अतः इसके लिये निम्न लिखित उपाय काम में लाना चाहिये।* ऊपर एक प्रकार के दिवड़ जाति के सर्प का इलाज बताया है।

(अ) गुराड़ की अन्तर छाल १० तोला

पानी ४० तोला

बारीक पीस पानी में मिलाकर पिला दें।

(ब) दाग लगावें।

अगर जानवर सर्प की केंचुली खा जाय तो निम्न लिखित इलाज करना चाहिए।

(अ) लालमिर्च ४० तोला
सेंधा नमक २० तोला

इनको बारीक पीस कर थोड़े से पानी में ३ लड्डू बना लें और १२ घण्टे के अन्तर से एक एक खिलावें।

(ब) जहर उतर जाने के बाद एवं दस्त बन्द होने के बाद जानवर को थोड़ा घृत भी पिलाया जाय

शेर का जानवर को पकड़ लेना

शेर के दांत के घावों का जानवर पर अत्यधिक बुरा असर होता है। जहां जहां दांत लगते हैं वहां वहां सूजन आ जाती है। कुछ समय बाद सूजन पक जाती है और जानवर बहुत कष्ट पाता है।

इलाज

(अ) किरकड़िया की पत्तियां ८० तोला
पानी १० सेर

पत्तों को पीस लें और पानी में डाल उबालें। कुछ पानी कम होने पर उतार लें और जख्मों पर सेक करें।

बर्र, भँवर या मधुमक्खी का काट खाना

(१) सर्व प्रथम काटे हुए स्थान के डंक या काँटे निकाल देना चाहिए।

(२) घृत कुमारी का गूदा निकाल कर उसको शरीर पर लगाना चाहिए।

(३) घी २० तोला
मिश्री १० तोला मिलाकर जानवर को पिलावें।

जानवर का दूध बढ़ाने के इलाज

जानवर को निम्न लिखित वस्तुएँ दें :—

(१)	सहस्र मूली	२० तोला
	गेहूं का दलिया	८० तोला
	पानी	३ सेर
	गुड़	२० तोला

प्रथम सहस्र मूली को साफ करना चाहिए। ऊपर की पतली झिल्ली एवं अन्दर के रेशे भी निकाल दें। तत्पश्चात् सब को पकाकर खिलाना चाहिए।

(२)	असकन्ध की जड़	२० तोला
	गेहूं का दलिया	१ सेर
	गुड़	¼ सेर
	पानी	३ सेर

ऊपर लिखानुसार दें।

खान-पान

जानवर को पौष्टिक खुराक अधिक दें।

जख्म को पकाना

(१) नहाने का अच्छा साबुन
हल्दी
नमक
पानी

सबको मिला पकाकर जख्म या सूजन पर बांध दें।

(२) नई कन्द

नमक

पानी

ऊपर लिखानुसार ऊपर बांधना चाहिए।

(३) इसी तरह कलिंगड़ा, नमक और पानी या बैंगन, नमक और पानी मिलाकर गर्म करके बांधना चाहिए।

(४) गेहूं का आटा और आक का दुग्ध गर्म करके बांध दें।

(५) तेल

आक का दुग्ध। दोनों को मिलाकर लगावें।

(६) जख्म को पकने के बाद चूना, सज्जी अथवा तेल, आक का दूध अथवा कॉस्टिक सोडा लगाकर फोड़ सकते हैं।

जुएँ मारना

(१) तम्बाखू, सोडा चूना और पानी को मिलाकर गर्म करें और कुनकुने पानी से जानवर को स्नान करावें।

(२) तम्बाखू, चूना, सोडा अफीम और पानी ऊपर लिखानुसार उपयोग में लावें।

बत्तीसा चूर्ण

१	दितौनी की जड़	२० तोला	६	धनिया	८० तोला
२	अमलतास का गूदा	८० ,,	७	सौंफ	८० ,,
३	पुवाड़िया के बीज	२०० ,,	८	कुटकी	८० ,,
४	अजवायन	८० ,,	९	चिरायता	८० ,,
५	जीरा	८० ,,	१०	नौसादर	४० ,,

११ गौलन के बीज	२० तोला	३१ सौंठ	८० तोला
१२ बेवची	२०० ,,	३२ लौंग	४० ,,
१३ फिटकड़ी	८० ,,	३३ नावा	२० ,,
१४ आम्बाहल्दी	२०० ,,	३४ पलाश बीज	४० ,,
१५ सज्जी	८० ,,	३५ सनाय	८० ,,
१६ काला नमक	१६० ,,	३६ हींग	२० ,,
१७ सेंधा नमक	१६० ,,	३७ जायफल	२० ,,
१८ देशी नमक	८० ,,	३८ दाल चीनी	२० ,,
१९ रगतरोड़ा	८० ,,	३९ संचोरा	४० ,,
२० मेथी	२०० ,,	४० ब्रहमी	४० ,,
२१ गिरदान	४० ,,	४१ घुड़वच	८० ,,
२२ असगन्ध	२४० ,,	४२ हाथी पगा	८० ,,
२३ भंग	४० ,,	४३ काला कूड़ा	८० ,,
२४ खसखस	१६० ,,	४४ कायफल	२० ,,
२५ सप्तपरण पत्ते	८० ,,	४५ सांभर बेला	८० ,,
२६ कालीजीरी	१६० ,,	४६ वाल के बीज	८० ,,
२७ कड़वी काचरी	१६० ,,	४७ पुनरनवा	८० ,,
२८ नागौरी असगन्ध	२४० ,,	४८ सुरजेना के बीज	८० ,,
२९ गटार	४० ,,	४९ डिकामाली	८० ,,
३० काली मिर्च	४० ,,	५० नीमगिलोय	१२० ,,

उपर्युक्त सब वस्तुओं को बारीक पीस कर किसी बर्तन में रख लेना चाहिए और आवश्यकतानुसार उपयोग में लाना चाहिए। यह चूर्ण किसी भी बीमारी में दिया जा सकता है। मात्रा जानवर की हालत, उम्र और ऋतु के अनुसार लेना चाहिए। साधारण तया २० तोला से ४० तोला तक दे सकते हैं। इसको जहाँ तक बन सके गर्म पानी के साथ ही देना चाहिए।

नासूर

आँवला	१ तोला
कौड़ी	१ तोला
नीला थोथा	½ तोला

आँवला तथा कौड़ी को जलाकर खाख कर लेना—पश्चात् उसमें ½ तोला नीला थोथा मिलाकर उसमें घी मिला देना।

इस को गरम करके नासूर में भर देना।

जानवर के कीड़े पड़ जाने पर

मकड़ी का जाला १
कागज सफेद १
कम्बल के बाल थोड़े

तीनों चीजें जलाकर रोटी में दे देने से कीड़े मर जाते हैं।

जानवर का एकदम अंधा हो जाना

बोची पर एक दाग आड़ा लगाकर कमर पर दाग लगाना—कूँल्हे के ऊपर पिछले पैरों की चटखूरी के नीचे तथा खूरों के ऊपर आड़ा दागना चाहिए।

इस काम में छतरी की काड़ी काम में लानी चाहिए।

आँखों में नीबू का रस ४-४ बूंद २-४ दिन तक डालना चाहिए।

जुलाब

पलाश के बीज	१० नग
अमलतास गुदा	१ तोला
दतोनी की जड़	२ तोला
नमक काला	३ तोला
पानी	½ सेर

सबको बारीक बांटना पानी उबालकर उसमें कुटी दवा डालना व ठंडा होने पर पिलाना।

बच्चे के मरने पर दूध का न देना

१. किलहरी   २॥ तोला
गुड़   २० तोला
गुड़ के साथ कूटकर सुबह-शाम ६-७ दिन तक देना।

२. अपामार्ग की जड़   १ नग
गुड़   ५ तोला
मिलाकर ५-७ रोज सुबह-शाम देना।

३. जुईकंद   २॥ तोला
गुड़   १० तोला
पीसकर गुड़ के साथ सुबह शाम ५-७ दिन तक देना।

४. शेषमूली (न्हार काटा) जड़   १० तोला
गेहूँ या बाजरे का दलिया   ८० तोला
गुड़   २० तोला

पकाकर उसमें तेल २० तोला डालकर या घी डालकर दस-बारह दिन तक देना।

५. असकंद   २० तोला
गेहूँ या बाजरे का दलिया   ८० तोला
गुड़   २० तोला
तेल या घी   २० तोला
सबको पकाकर १०-१२ रोज देना।

आलू के पत्ते खाने पर विष

इलाज

१. मेंहदी २।। तोला

धनिया २।। तोला

इनको कूटकर रातको ४० तोला पानी में कोरे मटके में गलाना चाहिए। शाम-सुबह गलाकर आराम होने तक देना।

२. नीबू का रस आंख में शाम सुबह ४ बूंद डालना चाहिए।

३. पानी का पोता उसके दिमाग पर रखना चाहिए।

अलासिया बरु या ज्वार की जड़ या पौधे का विष या खेजड़ा फली का विष

इसी बीमारी में जानवर को नशासा रहता है। खाना-पीना छोड़ देता है, जुगाली नहीं करता।

इलाज

गुड़ २० तोला

छाछ ४० तोला

इसको मिलाकर ४-४ घंटे से आराम होने तक देना।

सर्प की कैंचुली खाने का विष

इलाज

लाल मिर्च ४० तोला

सैंधा नमक २० तोला

गुड़ ४० तोला

पीसकर लड्डू बनाकर दिनमें २ मर्तबा देना। तीन दिन खिलाना। ऊपर बताई दवा का नुकसा ६ टाईम में देना याने कुल वजन सवा सेर होता है। तीन दिन के लिए।

गर्दन तोड़

गर्दन तोड़ में जानवर की गर्दन घूमती नहीं, अकड़ जाती है। बुखार रहता है, खाना पीना छोड़ देता है।

इलाज

१.	घुड़वच	१० तोला
	लहसन	२॥ तोला
	गुड़	२० तोला

सब को कूटकर शाम-सुबह देना। आराम होने तक देना।

२. दागना—जानवर के कान के छोर से गर्दन तक दोनों तरफ दाग देना।

सन्निपात का इलाज

१.	अलासिया	२॥ तोला
	घुड़वज	२॥ तोला
	इन्द्रायण फल-	२॥ तोला
	काला नमक	८ तोला

पीसकर गरम पानी करके कुनकुना शाम सुबह आराम होने तक देना।

२. दागना—जानवर के दोनों कूंखपर × × इस मुजब दाग देना व मुँहपर नककुरे के ऊपर आड़ा लगाना व बाची पर भी—इस मुजब दाग लगाना।

सींग का खोखला निकलना

इलाज

तेल व सिन्दूर मिलाकर गाढ़ा गाढ़ा लगाना और ऊपर बाल बांधकर पट्टी बांधना। पट्टी पर खोपरे का तेल मिलाकर लगाना ताकि मक्खी न बैठे।

चक्कर आने का इलाज

जानवर चक्कर खाकर गिर जाता है। यह बीमारी शुरूआत में वर्षा के नए पानी से पैदा होती है।

इलाज

१. चक्करदार चींटी जो जमीन पर चक्करदार बिल बनाती है उस जगह के बिल की चक्करवाली मिट्टी २॥ तोला
पानी २० तोला

यह पानी में घोलकर छानकर पिला देना। ऐसा चार चार घंटे से देते रहना।

दागना—दराती से नाक के ऊपर से लगाकर पूंछ तरफ से लेकर पीछे नाक तक ऐसा गोल पूरे शरीर का सर्कल लगाना।

चमारी पड़ने का इलाज

पहले नीम के उबले पानी से धोना बाद में

(१) अमचुल का तेल २ तोला
सींगदराज

सींगदराज को पीस कर अमचूल तेल में मिलाकर गरम करना। मिलाने पर लगाना, अगर जखम होगी तो भर जायगी।

(२) नील कपड़े में लगाने की व साबुन में मिलाकर लगाना ।

(३) मेंहदी मक्खन में मिलाकर लगाना ।

(४) रतनजोत का दूध लगाना ।

स्तन से खून आना

इलाज

(१) पीले फूल की बूटी   २॥ तोला
    पानी   २०   ,,

पीस कर पानी में मिलाकर पिलाना या गुड़ के साथ भी दे सकते हैं। गुड़ तोला २० में दे सकते हैं।

(२) तवे पर आग लेकर उसमें जिस स्तन से खून आता हो उसकी धार मारना ।

(३) खून आने वाले स्तन पर कंघी फिराना।

(४) औंधा जूता करके उस पर स्तन की धार मारना ।

(५) हनुमान की चढ़ी सिंदूर लाकर धूनी देना ।

(६) नीम के उबाले हुए पानी को कुनकुना होने पर उसमें नमक मिलाकर शाम-सुबह सेकना ।

(७) घी या मक्खन में डीकामाली मिलाकर लगाना ।

आर पिरानी आदि से नस में छेद होना

इलाज

(१) दही   ८०   तोला
    मसूर दाल जली हुई   २०   ,,

मिलाकर दिनमें तीन मर्तबा पानीमें मिलाकर एकजीव करके पिलाना ।

नोट:—जिस जानवर का पांव टूट जाय व कहीं भी चोट लगने से खून बंद न हो तो उपर्युक्त दवा पिलाने से खून गाढ़ा होकर बंद होता है।

आँख में चर्मिया पड जाना

इलाज

(१)	चूना	३ रत्ती
	तंबाखू	½ तोला
	नमक काला	½ ,,
	पानी	४० ,,

सबको बारीक पीस कर उबाल कर छान लें बाद में कुनकुने आँख में छींटे दें।

जीभपर छाले पड़ जाना

इलाज

(१)	बच्छांग की जड़	२ तोला
	घी	१० तोला

जड़ पीस कर घी में पिलाना।

बांझपन दूर करना

बांझ गाय हमेशा फूलती रहती है मगर गर्भ नहीं रहता है।

(१) गाय को फूलते ही उसको करीब २–३ दफे उलटी गुलाट सावधानी से देना ताकि उसे कहीं चोट न आवे।

(२) बाद उसे नीचे लिखी दवा पिलाना

पीली मिट्टी	२ तोला
केले का पानी	२० तोला
सिन्दूर	३ रत्ती

मिलाकर छानकर पिलाना।

(३) बाद २ घंटे के बाद उसे

गोबर	२० तोला
पानी	८० तोला

मिलाकर पिलाना

(४) उसे ऊँचा तान कर बांधना ताकि २४ घंटे तक बैठ न सके। पानी पिलाते रहें। २४ घंटे खाना न दें।

लोहा खाजाने पर

जानवर लोहा खाजाय तो वह दिनों-दिन सूखता जाता है।

इलाज

(१) लोहा गाल झाड़ की अंतर छाल ४० तोला

पानी	८० तोला

बारीक पीस कर छानकर पिलाना।

लोहा गाल झाड़ की पहिचान

झाड़ के अंदर अगर लोहा गाड़ दिया जाय तो वह गल जायगा कुछ रोज में इसे पहिचाना जाता है।

(२) लोह चुंबक शरीर पर से हररोज उतारना।

पांव की करवान का इलाज

(१) नीम की पत्ती के उबाले हुए पानी में नमक डालकर सेकना।

(२) कंडे जलाकर अच्छे जलने के बाद जमीन पर से आग हटाना व उस गरम जमीन पर पानी डालकर जानवर का करवान पांव रखवाना।

कुछ रोगों की नामावली

१. चेचक, शीतलामाता.	Rinderpest
२. शोव ज्वर डेरीदाडोना.	Diarrhoea of Rinderpest
३. गल घोटु.	Haemorrahagic Septi-caemia
४. मुंह खुरी, खुरसाडा.	Foot & Mouth Disease
५. गर्भपात.	Abortion
६. धनुर्वात.	Tetanus
७. जहर वात.	Bovine Surra
८, खुजली.	Mange
९. खोडा.	Ringworm
१०. पेट फूलना.	Tympany
११. पेट का दर्द.	Colic
१२. अपचन.	Indigestion
१३. पेट में कीडे पडना	Sustistinal Worm
१४. पेचिस.	Dysentery
१५. दस्त भगने से लगना.	Diarrhoes
१६. पेशाव से खून जाना.	Haematuria
१७. पेशाव रूक जाना.	Retention of Urine
१८. जुकाम.	Wounds
१९. बुखार.	Fever
२०. निमोनिया.	Pheumonia
२१. खासी ढासना.	Cough
२२. दमा.	Asthama
२३. मुंह में काटे बढना.	Stematitis

२४. शीत पित्त, पित्ती उछलना.	Epilepsy
२५. मिरगी, म्रिगी.	Fits
२६. विल्व, तिवा.	Tiwa (Ephimeral Fever)
२७. कमेडी.	Cancer of Horn
२८. खटामी.	Parclitid Abscesses
२९. खूर का रोग.	*Parpocatan of the...?*
३०. डॅड का रोग.	Cancer of throat
३१. ईल रोग.	Cancer of Tongue
३२. पटाडी रोग.	Diarrhoea
३३. हिया विलाई.	Cocceidiosis
३४. तिड रोग. तिड्डू.	Filaria Haemorrhagica.
३५. फांसी रोग, छड रोग.	Anthra
३६. पूंछ का वांडी रोग.	Gangrene of tail
३७. आंख का फूला.	Conjunctivitis
३८. आंख में खून जमना.	Worms in Eye
३९. आंख का कोया निकालना.	Injury in Eye
४०. रतौंध आना.	Night Blindness
४१. हाथी पगा	Elephantiasis
४२. बच्चा गिरा देना.	Abortion(s)
४३. जेर न गिरना.	Retention of placenta
४४. थनदाह, थन का सूजना.	Mammitis
४५. बच्चेदानी का निकलना, फूल निकलना.	Prolapse of uterus
४६. गर्भधारण नहीं करना.	Sterility
४७. वार वार संयोग होनेपर भी गर्भ न रहना.	Contagious Abortion
४८. रक्तप्रदर.	Vaginitis
४९. माता का बच्चे को भूलना.	Cow forgets its calf
५०. हड्डी पर चोट लगना व टूटना	Fracture compound

५१. हड्डीका टूट कर बाहर आ जाना	Communicatal compound Fracture
५२. झटका लगना.	Sprain
५३. पसली टूटना.	Fracture of rib
५४. हड्डी का जोड से सरकना, तथा मोच आना.	Dislocation of Joint
५५. कमर टूटना.	Fracture of Pelvic Bone
५६. आगेकी पैर को डांकली खिसकना.	Dislocation of shoulder Joint
५७. खुर मोच, खुर खिसकना.	Cracked Hoof
५८. सींग टूट जाना.	Fracture of horn
५९. कंधे में गांठ होना.	Yoke gall
६०. कंधा तिडकना.	Yoke Prond flesh
६१. अकड जाना.	Rheumatism
६२. गठिया या जोडों का दर्द.	Owelling of Joints
६३. थन फटना.	Wound on teat
६४. थन पर फुंसियां होना.	Variola (Cow Pox)
६५. दूध पीते बच्चे को दस्त लगना.	Diarrhoes in Calves
६६. पागल कुत्ते, सियार आदि का काटना.	Rabas-Anti-Rabic
६७. कमजोर सांड को बलवान बनाना	Debility of Bull
६८. गर्मपानी.	Durns or scalds
६९. नजर लगना.	Evil Eye effect
७०. सांप, दिवड आदि का काटना.	Snake bite
७१. शेर के नाखून आदि का विष पर	Wound by tiger
७२. बरं, भंवर, मधुमक्खी का विष.	Poison of insects
७३. दूध बढाना.	To increase the quantity of Milk
७४. जख्म का पकना.	Performation in the wound

७५. जूंवा पडना.	Lice infection
७६. आग से जलना.	Warts
७७. नासूर.	Ulcer
७८. कीडे पड जाना.	Wound with maggots
७९. अंधा हो जाना.	Blindness
८०. खुर पकना.	Purgative
८१. बच्चे के मरने पर दूध न देना.	Agalactic (after the death of calf)
८२. आलु के पत्ते खाने पर विष.	Posioning by Potato leaves
८३. जुवार के पौधे खाने पर विष.	Posioning by Jwar leaves (Hudrocyanic Posioning) Sarghum Vulare stunted with draught.
८४. जेर खा लेना.	Eating of After births (Lacuta)
८५. स्वास्थ्य बनाये रखना.	Keeping the condition of Animal
८६. सर्प की केंचुली खाने का विष.	Poisioning by Snake skin shedding
८७. गर्दनतोड.	Meningitis
८८. सन्निपात.	Delirium
८९. सींग की खोल निकलना.	Horncare if removed by accident
९०. चक्कर आना.	Epilipsy x 24
९१. चमारी पडना.	Inflamed neck
९२. स्तन से खून आना.	Blood from teats
९३. आर पिराने आदि से नस में छेद होना.	Haemmorrhage

९४. गंज से वाल उड जाना.	Decomposition
९५. आंख में चिर्मियां पड जाना.	Filaria Lachrimalis
९६. जीभ पर छाले पडना.	Stomatitis
९७. इच्छानुसार वछडा वा वछडी लेना.	Influence on breeding a particular sex
९८. खुर वढना.	Sterility (See No. 46)
९९. लोहा खाने पर इलाज.	Eating of iron nails wires.
१००. पांव दलवाना.	Bruised Sole
१०१. अलसी का गुना खाने पर.	Poisioning by linseed
१०२. उलटी होना.	Vomiting
१०३. मस्सा होना.	Canker.

कुछ दवाइयों की नामावली

हिन्दी	मराठी	अंग्रेजी
१. मद्रिका	मालकांगणी	Abutilon Indicum
२.	उतरणी	Deamia Extensa
३. धतूरा		Datura Innoxia
४. तिनच	तिवस	Ougcinia Dalbergioides
५. खेजड़ा	हिवर	Acacia Leucophloea
६. अघाड़ा, आंझीझाड़ा, अपामार्ग	अघाड़ा	Achyranthes Aspera
७. झिनझिनी	चिलहाटी	Taesalpinia Sepiaria
८. सिसम	सिसम	Dalbergia Sissoo
९. मुंजाल		Mitragyna Parviflora
१०. दितुनी	दाती	Baliospermum Ascillare
११. रत्नज्योति	चन्द्रज्योति	Jatropha Gorsypifolia
१२. खांकरा, पलास, ढांकवेला		Butea Frondosa
१३. पुनरनमां, पुंगली		Boerhaavia Repanda
१४. कुवाडिया	तरोटा	Cassiatora
१५. चम्पा थूहर	निवडूंग	Euphorbia S. P. (Acrid Principles)
१६. सीताफल		Anona Squamosa
१७. सांवरवेला		Lettsomia Setosa
१८. अमलतास	भावा की फली	Cassia Fistula
१९. सूर्यचक्री	रान वटाना	Chrozophora Plicata
२०. अेरडीं	अेरडीं	Recinus Commuuis
२१. सत्यनाशी धथुरा	पड्डी	Argemone Mexicana
२२. महुवा	मोहों	Bassia Lalifolia

२३. गवांरपाठा, गृहनकुमारी	कालीची का पान	Aloe-Vera
२४. खाकर वेली		Rlayuchosia Ruininra
२५. आकंड़ा, मल्हार	रुई	May be (Calotropis Gigantea)
२६. वेवची	बावची	Psoralia Corylifolia
२७. विलायती सत्या-नाशी धतूरा	पड्डी	May be (Argenione Mcxicana)
२८. मेढा पाती		Levcas Aspera
२९. अरनी	टाकल	Cbrodmdron Phlomides
३०. वकान	वकान	May be Melia Sq.
३१. हुलहुल	खापरखुंटी	Hemigraplus Dura
३२. कंवर मोंढी	कंवर मोढ़ी	Tridar Procumbens
३३. हत्ती सूंडी		Heliotrrpum Supinum
३४. सालवैठनीया	कोला का आंड	Lepidogathis Cristata
३५. हजारी गेन्दा	रानझंडू	Leonotis Uepetae Folia
३६. वेवची	बावची	P. Corylifolia
३७. सूरजना	मूंगना	Moringa Pterygosperma
३८. खांकर वेली		R. Minima
३९. करमंदी	करन्दी	Gumuospona Kottieana
४०. उन्दाफूली, पानाचोली		Tricbodesmazey lanicum

कुछ रोग तथा उनके उपचारोपयोगी औषधि

बीमारी का नाम	दवाई
१. हड्डी टूटने का इलाज	तिनज की अंतर छाल और गाय का मूत्र ।
२. जेर बात की दवाई	हुलहुल, सत्यानाशी, और गुड़ ।
३. शीतमें आने की बीमारी	घुडवच्छ, गउलन, कालीजीरी, गुड, निमक, लसन और पानी ।
४. पैर मोच खाने की दवा	मुंजाल की पत्ती, नमक, पानी ।
५. आंखों में फूला पड़ने की दवा	सांभरकासिंग, मिक्खन, कामिया सिंदुर, निंबू का रस ।
६. खांसने की बीमारी की दवा	साल के छिलके, या चूने का पानी।
७. आंखों में फूल हो जाय उसकी दवा	चंपा थूअर का दूधकनपटी में लगाना ।
८. सुर की दवा	सेमल की रुई और मक्खन का मिला सिंदूर, भरना
९. नजर	सुन्दर बेल खिलाना, वहेड़े परोले लेकर गले में बांधना
१०. दूध पीते बच्चे को छुड़ाना	मोर के अंडो का छिलका, दही और नमक
११. हेडकी	नमक और मिस्सी
१२. खोड़ा	जला हुआ तेल और असगंध, कुरंज का तेल
१३. जुलाब	दितोनीकी जड, पलास के बीज अमलतास की फली
१४. पहाड़ी	नीम की पत्ती, घी, अरनी की पत्ती

१५. माता, चेचक	हस्ती सूंडी पानी के साथ
१६. वेल को झटका लगाना	फिटकरी, आंवाहळदी, सज्जी, काला नमक मेथी दाना और छांछ
१७. दाफड	सरसों का तेल और नमक
१८. जेर नहीं डालने की दवा	फेफर की पत्ती, गुड और पानी
१९. सींग टूटना	बेल का गीर, सिंदूर, मीठा
२०. सींग टूट जाने से	तेल, सिंदूर, और बबूल का गोंद
२१. चक्कर	चीटियों की माटी और पानी
२२. थन में खून आने की दवा	नीमकी पत्ती, नमक, पानी छिटकना
२३. वैल को कंधे में गांठ पड जाय	आंकडे की जड रोटी में खिलावे
२४. खुरसाडे की बीमारी से मसेहोना	२४. चितावल की जड, चूना, सज्जी, तमाखू, नीला थोथा
२५. मवेशी की बच्चेदानी निकलना	घी, काली मिर्च, गुडवेल, सांभर वेल, नीला थोथा
२६. खून रोकने के उपाय	मसूर की दाल और दही
२७. हाती पगा की बिमारी	कान काटकर आंखमें खून आंजना
२८. टट्टी लगना	मरोड फली, शहा जीरा, और छांछ
२९. जल जानेपर	अलसी का तेल, चूने का पानी, राल
३०. मुंह में कांटे होना	मक्खन, हलदी कैंची से काटकर लगाना
३१. कमेडी लग जाय	सोमल, भूरी रींगणि
३२. खुरसाडा	सिंदूर और तेल, आंकडे का दूध
३३. खाज की दवा	गंधक, मैंसल, भिलावा और घी
३४. बादल की बीमारी	अलसीया बांट पानी में पिलाना

३५. नजर	आंधी झाडे की जड रोटी में देना
३६. खूर में कीड़ा लगना या सड़ना	चूना,सीताफल की पत्ती बांध देना
३७. दिवड के काटने या चाटने की दवा	शिवलिगी बांट पानी में देना
३८. गर्भ गिरने से बचाना	शिवलिगी के बीज देना
३९. गाय या जानवर को शेर पकडले	किरकिडिया को पत्ती
४०. बैलों को टट्टी लगने से	छांछबगारा, जलीहुई ज्वार और छांछ
४१. आलू के पत्ते खा लेवे तो दवा	मेहंदी और बनीया
४२. भंवरे काट खावे तो	गंवार पाठा रगडना गूदा
४३. कंधा तिडकने पर	घघापलास की लकडी जलाकर मक्खन के साथ लगाना
४४. कंठ की बीमारी	कांसला बटकर पानी में पिलाना
४५. बदहजमी की दवा	गेहू, काला निमक,
४६. सांप की कैंचुली खानेसे टट्टी लगती है व गोबर में गंध आती है	लाल मिर्च आधा सेर, पावसेर सेंधा नमक, पीसकर १ लड्डू ३ बार में खिलाना
४७. दूध बढ़ाने की तरकीब	नहार कांटा या सेमसूल की जड खिलाने से
४८. इल की बीमारी	मनुष्य के माथे के बाल में गुड मिलाकर बंदूक के गरम गज से टिकियाको जखमपर लगाना
४९. अकडने की बीमारी	गुराड की छाल को लेकर उबालकर ४ बार देना
५०. थन कट जाने की दवा	चारे का कोष्ठा छीलकर सुखाना बाद में जलाकर मक्खन में मिलाकर लगाना

५१. थन में फुन्सी हो जाना	मक्खन में हल्दी नमक मिलाकर लगाना
५२. हिया वोलाय की विमारी पर	वदक का अंडा और दूध मिला-कर पिगाना
५३. जल जाने से गोडे सूजते हैं	साभर वेला, गिरदान, काला कुडा, नागोरी
५४. वैल के पेशाव में खून जाने से	गेदा आवा सेर पानी में घोलकर पिलाना
५५. तिड की दवाई	घृत और कांदे, कोसटा
५६. ताकत की दवाई	तेल और शक्कर
५७. दूध पीते वच्चे को टट्टी लगना	घृत और काली मिर्च
५८. खुरसाड़ा	पिचकारी द्वारा खरगोश का खून निकालकर २० से ३० तोले खाने के तेल में एक या दो बूंद खून को डाल पिला देना ।

गांधी अध्ययन केन्द्र

तिथि	तिथि